RNI Regd. No. GUJMUL/2016/68324
साल–९, अंक–९, पृष्ठ–४०, मूल्य–₹ २५, दिनांक : ०१ फरवरी–२०२४
Year-9, Issue-9, Page-40, Price : ₹ 25, Date : 01 February - 2024

CRIME FORCE

.... Always Alert, To Stop The Crime

सत्यमेव जयते

देश के करोड़ो बच्चे शराब और ड्रग्स के गुलाम !

देश की अनेक समस्याओं का सचोट निवारण

Bhavesh Kotak 98201 21003

PARITA CREATION

428, Atlantic Plaza, Garage Gully, Dadar West, Mumbai - 28,

RNI Regd. No. GUJMUL/2016/68324
साल-९, अंक-९ , पृष्ठ-४० मूल्य-₹२५
दिनांक : ०१ फरवरी-२०२४
"Crime Force" (Monthly)
Volume-9, Issue-9, Price-₹25
1st February-2024, Page: 40

मालिक-प्रकाशक-मुद्रकश्री
रणजीतसिंह जादव
Mob. : 098250 63283

निवासी तंत्रीश्री
हसु कपासी
Mob. : 098792 27272

मुख्य तंत्रीश्री
हृषिकेश बोरसे
Mob. : 091371 31739

तंत्रीश्री
विजय साणथरा
Mob. : 075750 55333

सहतंत्रीश्री
सतीष सोलंकी
Mob. : 092746 76760

सालाना लवाजम
भारत में : ₹ ३००/-
विदेश में : ₹ २५००/-

तंत्री स्थानसे...

अब सच्चे रामराज्य की स्थापना का समय आ गया है ।

आखिरकार ५०० साल के बाद अयोध्या में श्री रामजी को मंदिर मिल गया है । सब जगह पर आनंद और खुशी की लहर है । मंदिर में राम लल्लाजी की प्रतिमा का प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव भी भारी उत्साह के साथ मनाया गया ।

लेकिन अब हमारी जिम्मेदारी भी बढ़ गई है । इमारत बनाने के बाद उसका निभाव भी करना पड़ता है । उसको सही और सुरक्षित रखने के लिए समय, शक्ति और धनराशि की जरूरत रहती है । राम लल्ला तो आ गए लेकिन अब हमारे देश में राम राज्य बनाने का समय आ गया है । सरकार रोजगारी दे सकती है । हमारी जिम्मेदारी है की हब हमे देश में शांति के साथ निर्भयता और एखलास – एकता का माहौल बनाना पड़ेगा । रामायण में से अगर थोड़ी बातों को भी हम समझ कर हमारे जीवन में लागू करेंगे तो हमारा जीवन धन्य बन जाएगा और समाज में एकता और विश्वास पैदा हो सकता है । अपनी फर्ज का पालन, मित्रता,नैतिकता, आदर, सहिष्णुंता यह सब चीजें श्री राजा राम से सिख के हमें अपने जीवन में लागू करना चाहिए ।

वैसे भी अंतरराष्ट्रीय संबंधो और व्यापार विनिमय बढ़ाना हो तो देश में शांति और सलामती का होना जरूरी है । यह सब बातें सिर्फ सरकार करेंगे ऐसा नहीं है । हमें भी सरकार के साथ कदम मिलाकर काम करना होगा और अपने राष्ट्र को समृद्ध और सलामत बनाने के लिए अपना फर्ज निभाना पड़ेगा ।

जब ऐसा होगा तब हमारे देश में सच्चे तरीके से रामराज्यकी स्थापना होगी ।

मुख्य कार्यालय
राज कोम्प्लेक्ष, स्टार प्लाझा के सामने,
फुलछाब चौक, राजकोट - ३६० ००१

Website : www.crimeforce.in
E-mail: crimeforce9@gmail.com

London (U.K.) Bureau Office	Maharashtra Bureau Office	Mumbai - Bureau Office	Surat - Bureau Office	Baroda - Bureau Office	Ahmedabad - Bureau Office
NISHANT K. JANI Mo. +44 7999470980 43 Bowrons Ave, Wembley, HA0 4QS London (U.K.)	Chetan V. Solanki Mo. +096642 78700 Hrishikesh M. Borse Mo.+09137131739 Frist Floor, Dhan Mension, Opera House, Mumbai-400002	Akashbhai P. Shah Mo.+096196 70007 Arham Group Office No.24, 1st Floor, 110-Kakakuwa Bldg., 3rd Bhoiwada Corner, Bhuleshwar, Mumbai-400002	Ramjibhai N. Panseriya Mo. 97125 74032 Vinod M. Lavri Mo. 9825112244 Plot No. 1 Amul Society Near Shreeram Marbal bhatar, Surat-394510	Yagnesh Thakkar Mo. 099255 55400 Shailesh Thakkar Mo. 063548 60273 Think Overseas 301 Annapurna Complex, Opp. Makarpura Police Station, B/s Aangan Tower, Manjalpur, Vadodara-390011	Hitesh P. Prajapati Mo. +084600 03121 Parth P. Shah Mo.+097269 06767 328 Sangath Mall, Opp. Vishwakarma Engg. Collage, Motera, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005.

मुद्रण स्थान : श्री हरि ओफसेट, आरती अेस्टेट, ढेबर रोड (साउथ), राजकोट-३६०००२

CRIME FORCE HELPLINE No. : 092746 76760

अनुक्रमणिका...

राजकीय	05
ईन्टरनेशनल माफीया स्टोरी	07
वैश्विक टेरर...	10
ओफबीट	14
अनसंग हिरो	16
कवर स्टोरी	23
वक्त का तकाजा	27
पोल्युशन कंट्रोल	30
स्वास्थ्य	33
मुंबई के अंडरवर्ल्ड की	
खोफनाक बातें	35

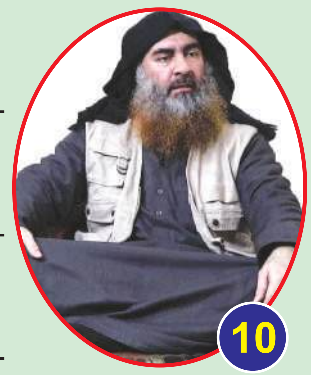

किस्सा 'कुर्सी कुमार' का फिर एक बार पलटे नीतीश कुमार

२०२४ का लोकसभा चुनाव नजदीक आ रहा है। सरकार और सभी विपक्षी दलों अपने-अपने तरीके से अपने राजकीय दल को मजबूत करने में लगे हैं। लेकिन मानो के विपक्षी महा गठबंधन I.N.D.I.A. को ऐसा ग्रहण लग गया कि उसको एक के बाद एक झटके लग रहे हैं। एक झटके से उभरे नहीं, दूसरा झटका लगने को तैयार ही होता है. २०२४ के लोकसभा चुनाव से पहले टीएमसी सुप्रीमो ममता बैनर्जी ने कहा की बंगाल में ''हमारी पार्टी स्वतंत्र रूप से लोकसभा के चुनाव लड़ेगी'' । हमें I.N.D.I.A. महागठबंधन के साथ सीटो का बटवारा नहीं करना है।२०२४ लोकसभा के चुनाव के बाद हम सोचेंगे कि I.N.D.I.A. गठबंधन में शामिल होना है कि नहीं. दूसरी ओर से झटका दिया AAP ने। AAP ने एलान कर दिया कि पंजाब की लोकसभा सीटों पर हम स्वतंत्र रुप से लड़ेंगे किसी के साथ सीटों का बटवारा का नही चाहते।

यह सब घटनाएं होने के बाद हाल में ही बिहार की राजनीति में बड़ा ही तूफान आया है। पलटुबाज नीतीशने फिर एक बार पक्षपलटा करने का ऐलान कर दिया। RJD के साथ गठबंधन तोड़के फिरसे बीजेपी के

राजकीय

◆ रणजीतसिंह जादव ◆

साथ जाने का फैसला कर लिया। इसी बातों को लेकर बिहार में सियासी उठापटक सुरु हो गई। RJD को तो मानों के साप सूंघ गया। लालू, तेजस्वी के साथ पुरी RJD को कुछ समझ में नहीं आ रहा है, कि यह क्या हो गया। बिहार में बीजेपी, जेडीयू, कांग्रेस और आरजेडी समेत सभी राजकीय दलों ने अपने विधायको और एमएलए के साथ मीटिंग शुरू कर दी और यह हालात में हम क्या कर सकते हैं इसकी चर्चाएं शुरू हो गई। RJD के तेजस्वी ने कह भी दीया के नीतीश के लिए पल्टीमार के नई सरकार बनाने का आसान नहीं रहेगा। लालूने अपने सभी विधायक, एमएलए, सब नेता लोग को अपने फोन २४ घंटे चालू रखने और पटना में ही रहने को कहा। कुछ भी हो सकता है। सबसे ज्यादा RJD को नुकसान हुआ तो लालू भी गुस्से में आ गए और ऐसे बयान देने लगे कि, नीतीश के पेट में ही दांत है और पेट के दांत खतरनाक होते हैं। तो लालू के बेटे तेज प्रताप ने कहा कि गिरकिट तो यूं ही बदनाम है, रंग बदलने का तो कोई नीतीश से सीखे। RJD के एक नेता ने कहा कि, नीतीश कूड़ा समान है जो अब कूड़ेदानी में समा गया। ऐसे कई बयानों अलग-अलग राजकीय दलों के नेताओं का आने लगा है और यह सहज भी है।

RJD के पैरों के नीचे से जमीन सरक गई तो, I.N.D.I.A. गठबंधन को तो क्या हो गया, कैसे हो गया ये कुछ समझ में नहीं आया। कोंग्रेस एलायंस कमिटी के सदस्य भुपेश बघेल बिहार दौरे पे जाने वाले थे। वहां JDU और RJD के साथ मिलकर २०२४ लोकसभा चुनाव के लिए कांग्रेस के साथ सीटों के बंटवारे के बारे में चर्चा करने वाले थे। लेकिन अचानक 'कुर्सी कुमार' के द्वारा फिर एक बार पलट जाने से उनका दौरा कैंसिल करना पड़ा।

नीतीश वैसे भी पलटुराम के नाम से जाने जाते हैं। क्योंकि जब भी अवसर मिला है तब उन्होंने पक्ष पलटा किया है। १९९४

में जनता दल को छोड़कर समता पार्टी में गए थे । २०१३ में एनडीए से अलग होकर आरजेडी में गए थे । २०१७ में महा गठबंधन से एनडीए में गए थे । २०२२ में फिर से एनडीए को छोड़कर आरजेडी में शामिल हुए थे और अब २०२४ में फिर एक बार एनडीए का वापस दामन थामा है ।

राजनीति में वैसे भी वादे और मान मर्यादा का कुछ वजूद नहीं होता. २०२२ में जब नीतीश एनडीए से पल्ला झड़कर आरजेडी में गए थे तब उसने कहा था की, ''में मर जाना पसंद करूंगा लेकिन एनडीए में वापस नहीं जाऊंगा'' । दूसरी ओर से बीजेपी के अमित शाह ने भी कहा था की ''नीतीश लिए एनडीए के दरवाजे बंद हो गए हैं । अब नीतीश को एनडीए में नो एंट्री है'' । लेकिन हुआ क्या? क्या नीतीश ने मर जाना पसंद किया ? और दूसरी ओर नीतीश के लिए एनडीए का बंद दरवाजा भी खुल गया । इसी का नाम ही राजनीति है यहां कुछ पर्मेनेंट नहीं होता ।

यह घटनाक्रम के दौरान नीतीश ने कुछ बातें जाहिर कि, जैसे कि मेरे साथ आरजेडी का व्यवहार ठीक नहीं था, मेरे काम की क्रेडिट आरजेडी ले जाती थी, हमारी और आरजेडी की विचारधारा मेल नहीं खा रही थी । गठबंधन के बारे में बताते कहां की I.N.D.I.A. गठबंधन में कोई काम नहीं हो रहा था । गठबंधन में शामिल अलग-अलग राजकीय दलों के विचारो में असमानता थी । दूसरी और सरकार की तरफ से कर्पूरी ठाकुर को पद्मश्री अवार्ड देने का तय किया गया तब नीतीश ने मोदी की तारीफ करके कहा कि ऐसा मोदी ही कर सकते हैं । इसके बारे में कांग्रेस की सरकार जब केंद्र में थी तब कभी भी नहीं सोचा या ऐसा फैसला नहीं लिया गया था ।

वैसे भी थोड़े समय से नीतीश समय-समय पर मोदी की तारीफ करते रहते थे और बीजेपी के प्रति उसका नजरियां भी बदल रहा था, क्योंकि उसको मालूम हो गया था कि २०२४ लोकसभा चुनाव में फिर एक बार

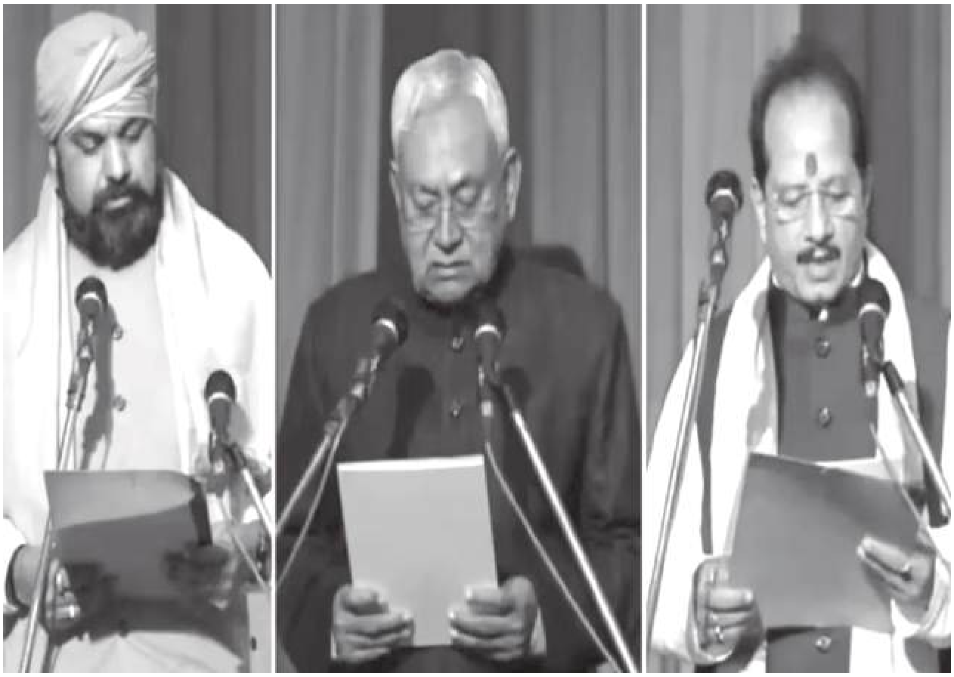

मोदी की सरकार आने की पूरी संभावना है और दूसरी ओर से आरजेडी के साथ तालमेल भी सही नहीं चल रहा था ।

आखिरकार दिनांक त २८/१/२४ को सुबह नीतीश ने अपना इस्तीफा बिहार के राज्यपाल को सौंप दिया था और उसी दिन शाम को ही नई सरकार के शपथ ग्रहण का कार्यक्रम तय किया गया था । यह सरकार में बीजेपी के सम्राट चौधरी और विजय सिन्हा डिप्टी सीएम बनाए गए हैं । इसी तरह नीतीश ने ९वी बार फिर से बिहार के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लिया ।

बीजेपी के लिए तो यह सब तोहफे जैसा है । क्योंकि २०२४ का लोकसभा चुनाव नजदीक हैं तब अचानक नीतीश का एनडीए में आना उनके लिए फायदेमंद रहेगा । HAAM के जितेन मांझी, LJP के चिराग पासवान और RLSP के उपेंद्र कुशवाहा ने पहले ही साफ कर दिया है कि हम एनडीए के साथ है । नीतीश की एनडीए के साथ नई सरकार में समाज के सभी वर्गों का ख्याल रखा गया है और उसी तरह से मंत्रिमंडल बनाया गया है । अब बीजेपी का २०२४ के लोकसभा चुनाव के लिए रखा गया ४००+ लक्ष्यांक को प्राप्त करने की राह आसान रहेगी. एक तरफ एनडीए की राजकीय स्थिति मजबूत हुई है तो दूसरी ओर विपक्षी दलों के गठबंधन I.N.D.I.A. की स्थिति बिगड़ती होते जा रही है । कांग्रेस का वर्चस्व I.N.D.I.A. गठबंधन में कम होता जा रहा है ।

राजनीति का कोई भरोसा नहीं है । कोन किसके साथ है और कब किसके साथ जाए, उसका कुछ आगे से तय नहीं होता । अपने फायदे के लिए यहां कुछ भी हो सकता है । यहां पे कुछ पर्मेनेट नही होता । राजनीति में वादे और नितिमत्ता को जगह नही है । नीतीश का २०२४ का यह पक्षपलटा उसका एकदम सही उदाहरण है ।

राजनीति में वैसे भी वादे और मान मर्यादा का कुछ वजूद नहीं होता. २०२२ में जब नीतीश ने एनडीए से पल्ला झड़कर आरजेडी में गए थे तब उसने कहा था की, ' में मर जाना पसंद करूंगा लेकिन एनडीए में वापस नहीं जाऊंगा.'

खतरनाक खूंखार इटालियन माफिया डॉन ज्होन गेम्बीनो

दोस्तों, हम अपने मैगजीन में कई बार कोइ एक अंतरराष्ट्रीय माफिया डॉन के बारे में विस्तृत तरीके से बताते रहते हैं। आज हम ऐसे ही एक खतरनाक और खौफनाक इटालियन माफिया डॉन ज्होन गेम्बीनो के बारे में विस्तृत जानकारी देंगे।

ज्होन गेम्बीनो का जन्म इटली देश के सिसिली आयरलैंड के पार्लेमो में २२ अगस्त ,१९४० में हुआ था। वह एक इटालियन मुल का मोबस्टार था। गेम्बीनो १९७५ में क्राइम फैमिली का सदस्य बना था और १९८६ में उसके फैमिली बॉस ज्होन गोट्टी द्वारा गेम्बीनो फैमिली के लीडर के रूप में उसको चुना गया था इस वजह से वह अब एक शक्तिशाली गेम्बीनो सिसिलियन गुटके लीडर के तौर पर बहुत ही ताकतवर बन गया था।

उनके छोटे भाई रोझारियों और जोसेफ गेम्बीनो के साथ मिलकर न्यू जर्सी शहर में ओपरेशनो करने में सहूलियत रहे इसलिए वहां चेरी हिल गेम्बीनोझ नाम के गुटका निर्माण किया और गेम्बीनो को उसका लीडर बनाया। असल में वह लोग उसके फैमिली के लीडर कार्लो गेम्बीनोका दूर के रिश्तो से चचेरे भाइयों लगते थे।वह लोग सिसिलियन माफिया के नाम से जाने जाते थे।वैसे तो उसके पिता १९६४ में पूरे परिवार को न्यूयॉर्क लाए थे। गेम्बीनो ब्रदर्स ब्रुकलिन के बेनसन हर्स्ट में १८वीं एवेन्यू पर कैफे वेलेंटिनो चलाते थे। ऐसे ही गेम्बीनोझ चचेरे पार्लेमो के पास्सो दी रिगानो शहर के पड़ोस से आए। इसी तरह साल्वाटॉर इंझेरिलो के नेतृत्व में इंझेरीलो गुट की तरह ही इंझेरिलो-गेम्बीनो माफिया गुटने साथ मिलकर ट्रांस अटलांटिक माफिया परिवार का निर्माण किया। १९८१ में जब परिवार के लीडर साल्वाटोर इंझेरीलो की हत्या हुई तब दूसरे सामने वाले माफिया गुटके साथ लड़ाई में इंझेरीलो परिवार के सब सदस्य का खात्मा होना तय था तब न्यूयॉर्क में गेम्बीनो के गुनाइत गुट के बीच में दखलगिरी करके एक सौदा किया जिससे बच गए इंझेरिलॉज को यु.एस. में शरण लेने की इशद शर्त पर मंजूरी मिली थी की इंझेरिलॉज के कोई संतान कभी भी सिसिली वापस नहीं आएगा। उसमें से कई लोग न्यूयॉर्क के आसपास बस गए और गुट में परिवार के साथ जुड़ गए। वह लोग ग्लीस्पति (बचके आने वाले)के तौर पर जाने जाते थे।

ईन्टरनेशनल माफीया स्टोरी

◆ हसु कपासी ◆

ड्रग का व्यापार प्रतिबंधित होने के बाद भी गेम्बीनोझ बेनसन हर्ट्स की बाहर अंतरराष्ट्रीय हेरोइन की बड़े पैमाने पर हेरा फेरी करते थे। ज्होन गेम्बीनो, यु.एस. में सिसिलियन माफिया के हे रोइन ट्रेफिकर्स का निमंत्रण के तौर पर कन्वर्जिंग पॉइंट था, जो इंझेरिलोझ और स्टेफानो बोराडे परिवार ने बनाया हुआ था और यह जगह हेरोइन के शिपिंग के लिए अंतिम स्थल था जिसको सिसिली की प्रयोगशाला में तुर्की मॉर्फिन बेझ में से शुद्ध करने के लिए आया हुआ था। उनके संबंधी साल्वाटोर इंझेरिलोज गेम्बिनो ब्रदर्स को जुड़ने में कड़ी रूप थे। वैसे भी वह सिसिली

Joseph (left) and Thomas Gambino

के बहुत ही ताकतवर व्यक्ति थे। १९८० में हेरोइन ट्रैफिकिंग के केस में अग्रिम तपासनीश मेजिस्ट्रेट जिओवानी फाल्कन को उसकी तपास मे मालूम पड़ा की १९७० के दशक के अंत तक इंझेरिलो-गेम्बीनो-स्पाटोला नेटवर्क के ज़रिए हर साल यु.एस. में ६०० मिलियन डॉलर की हेरोइन की स्मगलिंग की जाती थी।

गेम्बीनो का इटालियन बैंकर मिसेल सिंडोना के साथ मजबूत रिश्ते थे। वह बार-बार पांचवी एवेन्यू पर आयी आलीशान होटल पियरे या गेम्बीनो की कैफे वैलेंटिनो में खुले आम साथ में डिनर लेते थे। जब फ्रैंकलिन नेशनल बैक की नादारी के लिए तकलीफ में आ गई थी तब ज्होन गेम्बीनो ने झूठा पासपोर्ट बनवा दिया था और उसकी तय हुई छेतरपिंडी की सुनवाई के पहले ११ सप्ताह के पहले उनका झूठा अपहरण किया गया था।

सिंडोना ने अपनी बैंक के साथ कीया आर्थिक घोटाला से माफियाओके बैंक में रहे पैसे का भी जोखिम हो गया था। अपहरण का असली मकसद सिंडोना के पुराने राजकीय साथियों को अलग-अलग तरीके से धमकी देना और ब्लैकमेल करके पैसा वापस लेने का था। ज्होन गेम्बीनो ने सिंडोना को उसका डूबा हुआ पैसा वापस लेने के लिए अनेको प्रयास किया लेकिन ऐसा हो ना सका तो सिंडोना की थी गिरफ्तारी हुई। इसी वजह से इंझेरोला गेम्बीनो- स्पाटोला नेटवर्क को दोषित करार दिया गया। अब तक यह तय नहीं हुआ की सिंडोना ने किए हुए आर्थिक बैंक घोटाला से जिस माफियाओं ने पैसा गंवाया था उसमें से किसी को पैसे वापस मिले कि नहीं।

ज्होन गेम्बीनो को १९८० में हेरोइन की हेराफेरी के धंधे के लिए दोषी माना गया था और उसको पार्लेमो में हेरोइन की गेरकानुनी हेरा फेरी के केस में साढ़े ६ साल की जेल की सजा हुई थी। १९८५ में कोर्ट में जब उसको यह सजा सुनाई तब वह मौजूद नहीं था। उसके बाद भी ज्होन गेम्बीनो आझाद घूम रहा था क्योंकि यु.एस. और इटली के बीच प्रत्यार्पण का कानून नहीं बना था।

ज्होन गेम्बीनो को १९८४ में न्यू जर्सी ड्रग केस में कोर्ट की ओर से निर्दोष करार दिया गया था। जब की इसी केस में उनके भाई रोझारियों को दोषी करार दिया गया था और उनके तहत उसको ४५ साल के कारावास की सजा सुनाई गई थी।

यु.एस. और इटालियन सरकारों के बीच प्रत्यार्पण का कानून अस्तित्व में आया तब १ दिसंबर, १९८८ को ऑपरेशन 'आयरन टावर' नाम से गेम्बीनो - इंझेरिलो नेटवर्क पर रेड करके इटालियन और फेडरल वकीलों ने इटली और यु .एस. के करीबन २०० प्रतिनिधियों पर ड्रग हेराफेरी के तहोमत लगाकर दोषी करार दिया गया था। इस लिस्ट में ज्होन गेम्बीनो भी शामिल था जो कैफे गिआर्डन का मालिक था। तब वहां आए हुए इटालियन सिंगर को सुनने के लिए करीबन १००० लोग कैफे पर इकट्ठे हुए थे। जब एक मंच पर से एक एनाउंसर ने माइक से कहा कि पार्टी खत्म हो गई है और यह आप का अंतिम नृत्य है तब पार्टी में शामिल हुऐ कुछ लोगों का लगा के वह मजाक कर रहा है। लेकिन वहां जब लोग भागने लगे और कुछ लोगों की गिरफ्तारी हुई तब लोगों को समझ में आया कि आखिर कुछ गंभीर घटनाएं हुई है। ज्होन गेम्बीनो पर आरोप लगाने में एफबीआई को सफलता न मिली क्योंकि उसके पास जरूरी सबूत नहीं थे। लेकिन कोर्ट के एफिडेविट में ज्होन गेम्बीनो को परिवार के ब्रुकलिन स्थित सिसिलियन गुट का लीडर माना गया था। जिसमें गेम्बीनो ब्रदर्स को १९८८ और १९८९ में शुरुआत में

लगे आरोपों से बरी किया गया था।

४ जनवरी, १९९० में ज्होन गेम्बीनो को फिर से कस्टडी में लिया गया और बाद में उस पर नशीले पदार्थ और रिकिटियरिंग वायोलेंस का आरोप लगाया गया था। उसके बाद ५ जनवरी, १९९० के दिन उनकी पत्नी विट्टोरीया गेम्बीनो और उनके पुत्र टॉमी गेम्बीनो की २ मिलियन डॉलर की व्यक्तिगत पहचान बॉन्ड पर उनको रिहा किया गया था।

न्यूयॉर्क गेम्बीनो गुनाईत परिवार के सामी ग्रेबानो और ताज के साक्षी बन गए इटालियन पेंटिटो फ्रांसिस्को मेरिनो मन्नोई की माफिया टर्न कोर्ट के सबूतों की वजह से जो और ज्होन गेम्बीनो समेत ६ आरोपियों पर ऐसा आरोप लगाया कि उन्होंने स्मगलिंग करके ड्रग्सका वितरण किया, कई संगठित गुन्हाओ की तरकीब रची और १९८८ में फ्रांसिस्को कोलावेरी की हत्यामें भी वह लोग शामिल थे। गेम्बीनो ब्रदर्स १ सितंबर, १९९२ के दिन मैराथन के मेनहट्टन के फेडरल जिला कोर्ट में ५ मिलियन यु.एस. डॉलर्स के जामीन गवांकर अपनी गिरफ्तारी के लिए हाजिर हुए थे।

१७ सितंबर, १९९२ को गेम्बीनो ब्रदर्स की नॉर्थ फ्लोरिडा के फोर्ट राउड रेल के एक प्राइवेट मोटल के स्यूट में से गिरफ्तारी की गई थी। ऐसा बताया गया था की वहां उसके साक्षीयो भी हाजिर थे।

फरवरी, १९९३ में जो और ज्होन गेम्बीनो और उनके साथीदारों लोरेन्झ मन्नैनो और मट्टिओ रोमानो की सुनवाई शुरू हुई। कोर्ट की कार्यवाही में उनको सिसिलियन माफिया, इटली और नॉर्थ अमेरिका से मियामी और न्यूयॉर्क में स्मगलिंग किए हुए हेरोइन के मुख्य विक्रेता के रूप में दर्शाया गया था।

सिंडोना ने अपनी बैंक के साथ कीया आर्थिक घोटाला से माफियाओके बैंक में रहे पैसे का भी जोखिम हो गया था. ज्होन गेम्बीनो ने सिंडोना को उसका डूबा हुआ पैसा वापस लेने के लिए अनेको प्रयास किया लेकिन ऐसा हो ना सका तो सिंडोना की थी गिरफ्तारी हुई

बचाव पक्ष के वकील ने बताया कि इस केस में केंद्रीय ड्रग और हत्या के आरोपी मेरिनो मन्नैयो की असंगठित जुबानी पर टिकी हुई है। और ग्रेवानो, जिसको बचाव में हत्याराये और झूठे लोग बताए गए थे।

जुन, १९९३ में झूठी कार्यवाही में यह सुनवाई खत्म हुई थी लेकिन ज्यूरी रेटरिंग, ड्रग हेराफेरी और हत्या के आरोपों पर फैसले तक पहुंचने में असमर्थ थी।

मेरिनो मन्नैयो को को यु.एस. के विटनेस प्रोटेक्शन प्रोग्राम में दाखिल किया गया था लेकिन उस समय इटली में ऐसा कोई प्रोग्राम नहीं था। उसने ऐसी जुबानी दी थी कि वह ज्होन गेम्बीनो को व्यक्तिगत रूप से मिला था जिसने पार्लेमो में मेरिनो मन्नैयो के साथ हेरोइन रीफाइन किया था और उनकी गुणवत्ता का भी निरीक्षण किया था। उनकी यह जुबानी के कारण अंत में कायदेसरकी कार्यवाही में गेम्बीनोझ को ड्रग की हेराफेरी के लिए दोषीत क़रार दीया गया था।

जुन, १९९४ में फरियादी द्वारा बिना पैरोल १५ साल की सजा की बात रखी गई थी बाद में यह लोगों १९७५ से १९९२ तक की प्रवृत्ति के कारण अमल में आए रेटरिंग आरोपों के लिए दोषित मानने केलिए सहमत हुए थे।

जेल में ज्होन गेम्बीनो को स्ट्रोक और हार्ट एटैक की वजह से उनको बचाने के लिए उन पर ओपन हार्ट सर्जरी की गई थी। उनको जब २००४ में रिहा किया गया तब वह व्हीलचेयर में बैठा हुआ था लेकिन बाद में इटली द्वारा प्रत्यार्पण की मांग को मानकर फिर से इसकी गिरफ्तारी की गई थी। लेकिन वह जमानत पर रीहा हो गया था। सितंबर, २००६ में जब फेडरल न्यायाधीश ने ऐसा फैसला रद्द किया कि वह ड्रग के आरोपो का सामना करने के लिए इटली में प्रत्यार्पण करेगा। न्यायाधीश ने यह फैसला सुनाया की ज्होन गेम्बीनो को यु.एस. में ड्रग्स की हेराफेरी और हत्या के मामले में पहले से ही १५ साल की सजा सुनाई गई थी और इटली में वहीं आरोपो के तहत फिर से मुकदमा नहीं चला सकते।

ब्रुकलिन फेडरल कोर्ट में पेश किए गए कोर्ट के पेपर के मुताबिक ज्होन गेम्बीनो तीन सदस्यों की पेनल में से एक था जिसने गेम्बीनो गुट को चलाया। फरवरी, २००८ में ऑपरेशन ओल्ड ब्रिज के बाद डेनियल मेरिनो और बार्टोलोमियो 'बोबी' वर्नास सामने से नेतृत्व से रीहा हो गए। एफबीआई के कहने के मुताबिक ज्होन गेम्बीनोने २०० आदमियों की फौजदारी गैंग की लीडरशिप की थी। उसने यह सभी सदस्यों को ड्रग्स की हेराफेरी,गैर वसूली और कमरतोड़ ब्याज के धंधे के लिए सक्रिय किया था।वह उसकी पत्नी के भतीजे फ्रैंक काली के साथ परिवार के उच्च होदे पर था।

१६ नवबर, २०१७ को न्यूयॉर्क में इस खतरनाक खूंखार इटालियन माफिया डॉन की कुदरती रूप से मौत हुई थी।

सीरिया में आईएसआईएस सरगना टेररिस्ट
अबू इब्राहिम अल-हाशिमी अल-कुरेशी
के खात्मे के दिल धड़क ऑपरेशन की दंग करने वाली कहानी

वैश्विक टेरर...

◆ रामजी पानसेरीया-सुरत ◆

पूरी दुनिया में अलग-अलग आतंकी गुट सक्रिय है और वह अलग-अलग देश में आतंकी हमला करके अराजकता फैलाने में लगे हुए हैं। हमारे देश में भी १२ मार्च,१९९३ में सीरियल बम ब्लास्ट की नापाक हरकतें करके कई निर्दोष लोगों की जान छीन ली गई थी और कई लोग जख्मी हुए थे। जो आज भी यह वारदात याद करते हुए डर के मारे कांपने लगते हैं। एक और बड़ा आतंकी हमला २६- ११ -२००८ में मुंबई में हुआ था जिसमें भी कई निर्दोष लोगों की हत्या हुई थी और कई लोग जख्मी हुए थे।

यह दोनों हमले के मुख्य आरोपियों विदेशी भाग गए हैं और वहां पर एशो आराम की जिंदगी बिता रहे हैं। इसमें भी ज्यादातर आतंकवादी पाकिस्तान में छिपे बैठे हैं। हम भी जानते हैं और पूरी दुनिया भी जानती है कि पाकिस्तान ऐसे आतंकवादियों को पालता पोषता है। जैसे कि दाऊद इब्राहिम कराची में रहता है और

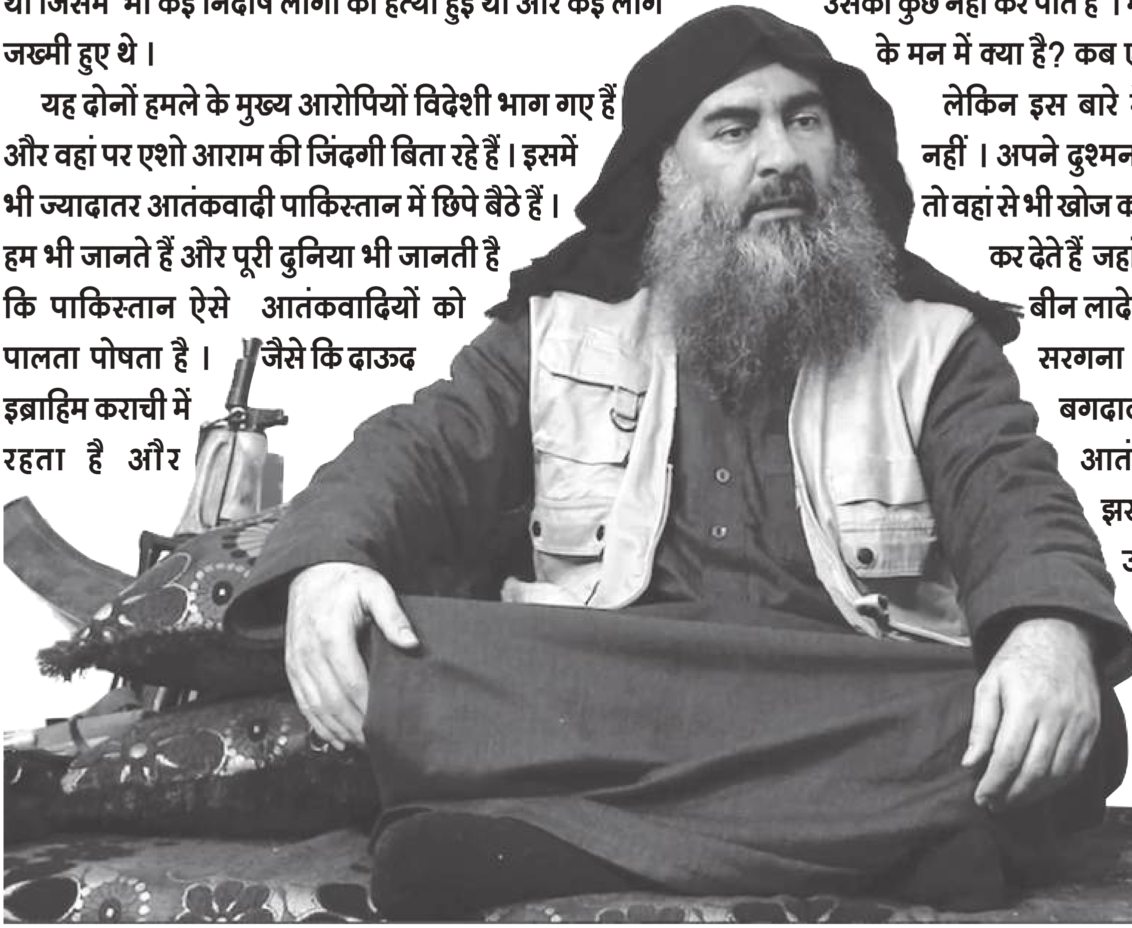

पाकिस्तान सेना उसकी निगरानी करती है और भी कई आतंकवादीयों पाकिस्तान में पनाह पाने के बाद के एशोआराम से अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। यह बातें जानते हुए भी पाकिस्तान ऐसी बातों का खंडन करता है और बेशर्मी से कहता है कि हमारे यहां कोई आतंकवादी नहीं है, ना हम किसी को पनाह देते हैं। कई आतंकवादियों का लोकेशन भी हमारी जासूसी संस्थाओं ने निकाल रखा है लेकिन फिर भी हम उसका कुछ नहीं कर पाते हैं। मालूम नहीं क्यों हमारी सरकार के मन में क्या है? कब एक्शन लेंगे?

लेकिन इस बारे में अमेरिका का कोई जवाब नहीं। अपने दुश्मन को दुनिया में कहीं छिपा हो तो वहां से भी खोज कर उसका वही जगह पर खात्मा कर देते हैं जहां वह छिपा हो, फिर वो ओसामा बीन लादेन हो या आईएसआईएस का सरगना आतंकवादी अबू बकर अल बगदादी और अलकायदा के खूंखार आतंकी लीडर अबू मुसाब अल झरकावी को उसके घर में घुसकर उन सब लोगों का खात्मा कर दिया था।

करीबन २ साल पहले ही एक और आईएसआईएस का सरगना आतंकवादी अबु

इब्राहिम को सीरिया में उसके ही आश्रय स्थान पर घुसकर खत्म कर दिया । इस दिलदलक ऑपरेशन की अचंबित कर देने वाली बातें बाहर आई है । आज हम उसकी बात करेंगे आगे बताया ऐसे अमेरिका के प्रमुखो बातें काम करते हैं और दुश्मनों को खत्म करने में आगे रहते हैं । अपने दुश्मनों को पाताल में से भी ढूंढकर उसको उसके घर में ही घुसकर उसको खत्म करने वाली सीधी-सादी नीति अपनाने वाले अमेरिका ने २ साल पहले और एक आतंकवादी सरगना का खात्मा करके अपनी क्षमता का परिचय दे दिया है ।

२ साल पहले सीरिया में तुर्की की सरहद नजदीकी बसा हुआ एटाह नाम के गांव में एक अंधेरी रात को अमेरिका के स्पेशल फोर्स के जवानों ने काउंटर टेररिज्म ऑपरेशन करके आईएसआईएस का अति क्रूर और खूंखार आतंकवादी सरगना अबू इब्राहिम अल-हाशीमी अल-कुरेशी का खात्मा कर दिया । इस ऑपरेशन की पूरी कहानी आप सुनेंगे तो आप भी जान जाएंगे कि यह कैसा दिलदलक ऑपरेशन था जो आपको अचंबित कर सकता है ।

यह ऑपरेशन बहुत ही जोख्मी था । इसमें अमेरिकी जवानों की जानहानी और निर्दोष नागरिकों के मारे जाने का डर था । इसलिए इस ऑपरेशन पल-पल और हर एक संभवित एक्शन के लिए अद्भुत प्लानिंग किया गया था । उसके पीछे कई महीनो कि मेहनत और सचोट इंटेलिजेंस इनपुट था । ऑपरेशन इतना महत्वपूर्ण और जोखमी था कि खुद अमेरिका के प्रमुख जो बाइडेन,वाइस प्रेसिडेंट कमला हैरिस और नेशनल सिक्योरिटी टीम के सदस्यों व्हाइट हाउस के सिचुएशन रूम में वापस मौजूद रहे थे और यह ऑपरेशन को लाइव देखा था । जब ओसामा बिन लादेन के ऑपरेशन के समय जैसा माहौल था वैसा ही माहौल सिचुएशन रूम में रिपीट हुआ था । वैसा ही रोमांच और तनावभरी पले थी और जब तक ऑपरेशन सफल नहीं हुआ तब तक वहां मौजूद रहे सब लोगों की सांसे थम गई थी । समान परिस्थितियां तब बनी जब लादेन के ऑपरेशन के समय हेलीकॉप्टर में टेक्निकल क्षति आ गई थी । ऐसा ही इस ऑपरेशन में भी हुआ । अमेरिकन हेलीकॉप्टर में टेक्निकल क्षति आने की वजह से उनका घटनास्थल से थोड़ी दूरी पर लैंडिंग करवाना पड़ा था और अबोटाबाद की तरह ही ऑपरेशन पूरा होने पर उसको वहां छोड़ने के बदले उस हेलीकॉप्टर को उड़ाया गया था (उसका नाश कर दिया था.)

करीबन २ साल पहले ही एक और आईएसआईएस का सरगना आतंकवादी अबु इब्राहिम को सीरिया में उसके ही आश्रय स्थान पर घुसकर खत्म कर दिया। इस दिलदलक ऑपरेशन की अचंभित कर देने वाली बातें बाहर आई है

व्हाइट हाउस ने जारी की माहिती मुताबिक अबू इब्राहिम करीबन १ साल से एटाह गांव के इस तीन मंजली इमारत में ऊपर के माले पर किराए पर रह रहा था । नीचे के दो माला का उपयोग मकान मालिक कर रहे थे । ऑपरेशन में निर्दोष लोगों की जाने ना जाए इस बारे में अमेरिका चिंतित था । लेकिन सब प्लान के मुताबिक ही हुआ और किसी निर्दोष लोगों की जान नहीं गई । इसलिए जब दूसरे मजले से कुछ बच्चे दौड़कर बाहर निकले तब सिचुएशन

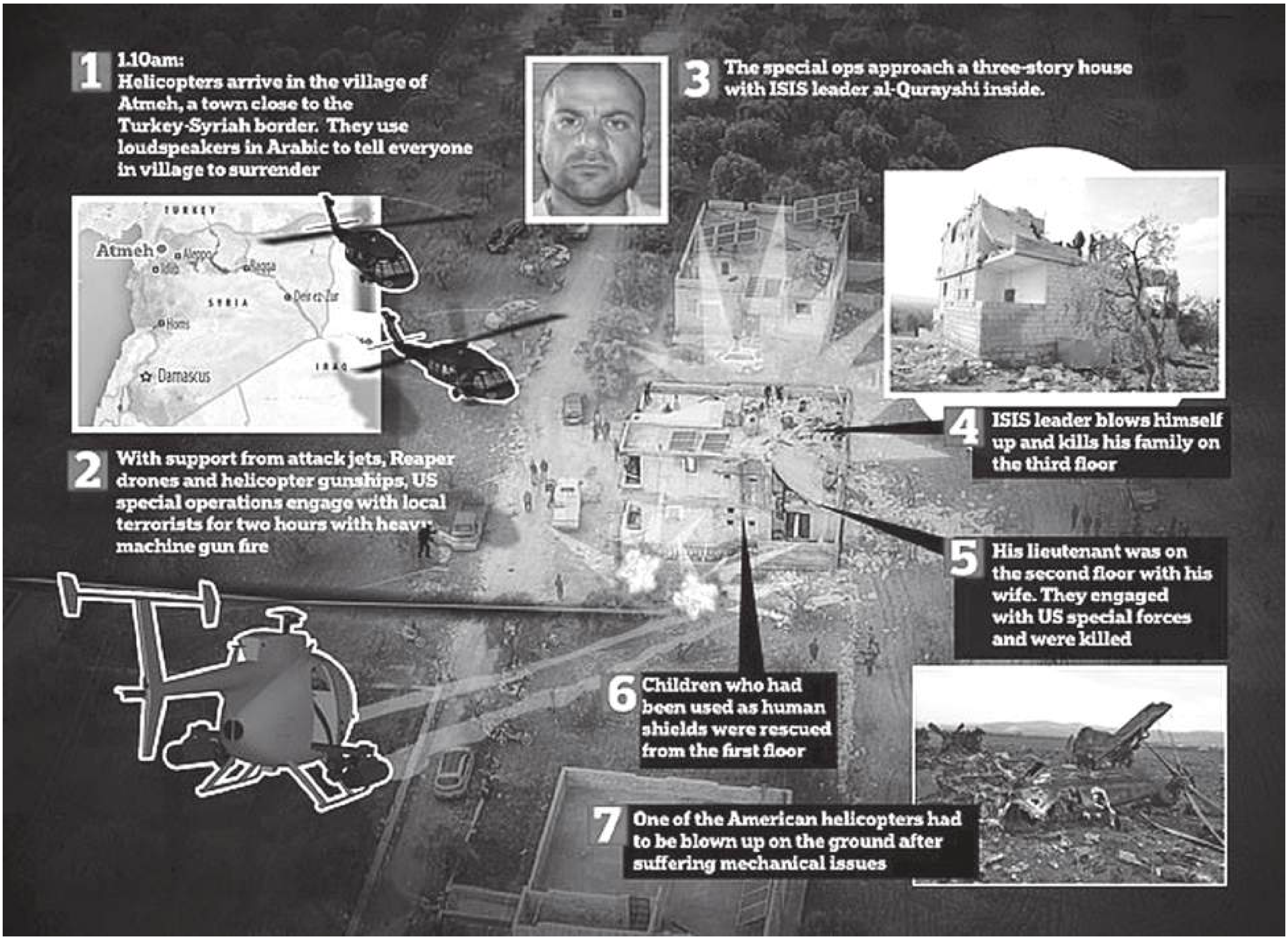

रूम में मौजूद रहे सब लोगों ने राहत की सांस ली और सब बच्चे बाहर गए तब थोड़ी पलों में एक भयानक विस्फोट हुआ था । अबू इब्राहिम ने अपनी कमर पर बंधे हुए विस्फोटक से खुद को और अपनी बीवी और बच्चों को उड़ा दिया था । विस्फोट इतना भयानक और शक्तिशाली था कि इमारत की छत और तीसरे मजले की दीवार धारासाई हो गई थी । मृतकों के शरीर के चिंथड़े उड गए थे और शरीर के कई टुकड़े दूर तक रास्ते पे पड़े मिले थे ।कुदरत का न्याय तो देखो हज़ारों निर्दोष लोगों की हत्या करने वाले अबू इब्राहिम के शरीर के अंग रास्ते में लोगों के पैरों के बीच उड़ रहे थे ।

अबू इब्राहिम अमेरिका का मोस्ट वोंटेड आतंकवादी था । बहुत समय से अमेरिका उसको खोज रहा था लेकिन वो बहुत चालाक था जो अपना ठिकाना बार-बार बदल रहा था और अमेरिका के हाथ से हमेंशा दूर रहता था लेकिन आखिरकार वह इस गांव में ऑलिव पेड़ों से ढकी हुई एक तीन मंजिला इमारत में किसी को शक ना जाए इसी तरह रहता था । ऐसी माहिती अमरीकी गुप्तचरों ने निकाली तब से अमेरिका ने वहां सर्विलांस नेटवर्क मजबूत बना दिया था । इस इमारत पर २४ घंटे का पहरा लगा दिया था । यह सब इतनी बारीकाई और गुप्तता से होता था कि अबु इब्राहिम और उसके साथीयों को भी उसका जरा सा भी पता नहीं चला । लादेन के केस में भी ऐसा ही हुआ था । उसका लोकेशन मिलने के बाद अबोटाबाद में अमेरिकन गुप्तचरों उसके आसपास २४ घंटे मौजुद रहते थे । एक तरीके से देखे तो लादेन और अबु इब्राहिम दोनों के केस में बहुत ही समानता थी । लादेन की तरह ही अबू भी ना बाहर निकलता था, नहीं जाहीर में दिखाई पड़ता था । वह भी संदेश लेने देने के लिए मोबाइल फोन, लैपटॉप के इंटरनेट का उपयोग नहीं करते कुरियर का उपयोग करता था । वह भी लादेन की तरह अपनी बीवी और बच्चों को ह्यूमन शील्ड की तरह उपयोग करता

अबू इब्राहिम अमेरिका का मोस्ट वोन्टेड आतंकवादी था। बहुत समय से अमेरिका उसको खोज रहा था लेकिन वो बहुत चालाक था जो अपना ठिकाना बार-बार बदल रहा था और अमेरिका के हाथ से हमेंशा दूर रहता था लेकिन आखिरकार वह इस गांव में ऑलिव पेड़ों से ढकी हुई एक तीन मंजिला इमारत में किसी को शक ना जाए इसी तरह रहता था.

था और लादेन की तरह ही कुरियर के जरिए ही अबू का पता चला था। व्हाइट हाउस के अफसर के कहने के मुताबिक एक बार यह तय हो गया कि मकान में रहने वाला अबू इब्राहिम ही है। फिर ऑपरेशन की पूरी योजनाएं बनाई गई थी। बाइडेन,डिफेंस मिनिस्टर लॉयड ऑस्टिन और यु एस।के सेन्ट्रल कमांड के कमांडर जनरल फ्रेंक मेकेंझी समेत ऑपरेशन के साथ जुड़े हुए कई अफसरों की मीटिंग में ऑपरेशन की सभी विगतो को बडे विस्तृत रूप से पेश किया गया था। रिस्क फैक्टरों को भी तपस्या गए थे। अमेरिकी फोर्स के पास दो विकल्प थे या तो एयर स्ट्राइक करके पूरी इमारत को ढेर कर दे या इमारत में अबु इब्राहिम के घर में घुसकर उसका खात्मा करना। पहला विकल्प सरल था क्योंकि इसमें अमेरिकी जवानों को कोई नुकसान या जानहानी का जोखिम नहीं था। लेकिन इमारत में नीचे दो मंजिल में रहने वाले लोगों और उनके बच्चों के मौत होना तय था। दुसरे विकल्प में अमरिकी जवानों की जिंदगी मौत के मुख में जा सकती थी फिर भी अमेरिका ने दूसरा विकल्प चुना। सूत्रों के मुताबिक होने वाले ऑपरेशन का अमेरिका की गुप्तचर जगह पर कई बार रिहर्सल किया गया था। बाद में बाइडेन ने ऑपरेशन को ग्रीन सिग्नल दिया और दूसरी ही रात को तय किए गए समय में अमेरिकी कमांडो ने योजना के मुताबिक उस इमारत पर हमला बोल दिया। अमेरिका का मूलभूत इरादा तो उसको जिंदा गिरफ्तार करना था। अबू की गिरफ्तारी से आईएसआईएस के गुप्त ठिकाने और उसके नेटवर्क और आगे कहां-कहां पर आतंकवादी हमला होने वाला है उसकी माहिती मिली जा सकती थी। इसके पहले भी जब २००८ में अमेरिका ने अबु इब्राहिम को ईरान में से गिरफ्तार किया था तब उसने अलकायदा के बारे में सब माहिती आसानी से अमेरिकी सेना के अफसर को बता दी थी और इसी माहिती के आधार पर अमेरिका ने अल कायदा के ईरान में रहे कई ठिकानों को ध्वस्त कर दिया था। अमेरिका जानता था कि अबू इब्राहिम गिरफ्तारी से बचने के लिए खुद को आत्महत्या करके खत्म कर सकता है

यह ऑपरेशन बहुत ही जोखमी था। इसमें अमेरिकी जवानों की जानहानी और निर्दोष नागरिकों के मारे जाने का डर था। इसलिए इस ऑपरेशन पल-पल और हर एक संभवित एक्शन के लिए अद्भुत प्लानिंग किया गया था

और हुआ भी ऐसा ही। उस रात को जब अमेरिकी वायु सेना के काफिले ने इमारत को घेर लिया था और बार-बार उसके आसपास रहने वाले लोगों को चेतावनी दी जाती थी कि, ''सब लोग अपने घर से दूर चले जाइए और यह पूरा एरिया खाली कर दे क्योंकि यहां हम हमला करने वाले हैं।'' यह सब अबु इब्राहिम अपने घर में छिपे हुए सुन रहा था लेकीन उसके पास मौत के इंतजार के सिवा कुछ बचा भी नहीं था। अबु ने अमरीकी हेलीकॉप्टर लैंड हो और कमांडो इमारत पर उतरे उसके पहले ही अपने आप और अपने परिवार को विस्फोटक से उड़ा दिया था। यह विस्फोट होने के बाद कमांडो दूसरी मंजिल पर पहुंचे तब अबु इब्राहिम के एक बॉडीगार्ड ने अपनी पत्नी को ह्यूमन शील्ड बनाकर कमांडो पर गोलीबारी की थी। लेकिन उसके जवाब ने अमेरिकी कमांडो ने गोलीबारी करके दोनों को मार गिराया था। अमेरिका का यह ऑपरेशन मूल रूप से दो घंटे का था लेकिन उसकी जगह पर थोड़ी ही मिनट में यह पूरा हो गया और एक और आतंकवादी को मौत के आगोश में सुलाया गया।

ऐसे आतंकवादियों का सफाया करने के लिए अपने देश की सरकारों के पास दृढ़ मनोबल और इच्छा शक्ति होना चाहिए। लेकिन अभी तो ऐसा लग रहा है कि विश्व में सिर्फ अमेरिका ही एक पत्र ऐसा देश है जो ऐसे कारनामें कर सकता है।

मुंबई अंडरवर्ल्ड की दादियाँ

जेनाबाई दारुवाली

सपना दीदी

गंगुबाई काठियावाडी

हमारे देश और पूरी दुनिया में अनगिनत माफियाओं, डॉन और बड़े-बड़े गैंगस्टर होते आए हैं। यह सब माफिया डॉन अलग-अलग धंधे में अपना राज चलाते हैं। और ऐसे नेशनल और इंटरनेशनल माफीयाओं के बारे में हम अपने मैगजीन में कई बार विस्तृत तरीके से उनकी कलंक कथा लिख चुके हैं और आगे भी लिखते रहेंगे।

लेकिन आपने शायद लेडी डॉन या लेडी माफिया के बारे में नहीं सुना होगा या कम सुना होगा। डेढ़ २ साल पहले संजय लीला भंसाली की फिल्म की वजह पिछली सदी की महिला गैंगस्टर गंगूबाई काठियावाड़ी अख़बारों में सुर्खी बन गई थी। मुंबई की एक वक्त की लेडी डॉन गंगूबाई काठियावाड़ी पर बनी फिल्म पर कई विवाद खड़े हुए थे और इसी वजह से कानूनी लड़ाई भी लड़ी गई थी और यह पूरा मामला सुप्रीम कोर्ट तक पहुंचा था। गंगूबाई काठियावाड़ी की जीवन कथा तो आपने उनकी इस फिल्म से जानी होगी इसलिए आज हम उनके बारे में बात नहीं करेंगे। लेकिन गंगूबाई के सीवा मुंबई अंडरवर्ल्ड में और कई महिलाओं ने अपना वर्चस्व जमाया था और अलग-अलग इलाकों

ओफबीट

◆ चेतन सोलंकी-मुंबई ◆

में अपना राज चलाया था। ऐसी कुछ लेडी माफिया के बारे में हम आपको यहां विस्तृत तरीके से जानकारी देते हैं।

गंगूबाई से भी ज्यादा शक्तिशाली लेडी माफिया लीडर थी,जेनाबाई दारूवाली जिसको लोग जेनाबाई खबरी, मौसी या आपा के नाम से बुलाते थे। जेनाबाई का जन्म १९२० में मुंबई में डोंगरी इलाके में हुआ था। उनका असली नाम जैनब था। उसके पिता बहुत ही गरीब थे। सात भाई-बहनों में जेनाबाई इकलौती बहन थी। सिर्फ १४ साल की आयु में जेनाबाइ की शादी रचाई गई थी और इसी वजह से छोटी आयु में ही वह पांच बच्चों की माता बन गई थी। १९४७ में जब अपने देश को आजादी मिली और देश का बंटवारा हुआ तब जेनाबाई के पति ने पाकिस्तान जाने का फैसला किया लेकिन जेनाबाई ने मना कर दिया और उसका पति पांच बच्चो और जेनाबाई को छोड़कर पाकिस्तान चला गया था।

जेनाबाई ने अपना और अपने पांच बच्चों का गुजरान चलाने के लिए चावल बैचना शुरू किया और इसी लाइन में से वह अनाज की चोरी करने के रास्ते पर चल

पड़ी। उसके बाद जेनाबाई ने शराब बनाना और उसकी बिक्री का काम शुरू कर दिया इसी वजह से वो जेनाबाई दारुवाली नाम से मशहूर हो गई ।

आपको जान के आश्चर्य होगा कि उस समय के करीमलाला, हाजी मस्तान, वरदराजन मुदलियार जैसे माफिया सरगना जेनाबाई के पास मश्वरा लेने के लिए आते थे। जेनाबाई बरसों के बाद पुलिस की खबरी बन गई थी इसलिए उसको लोग जेनाबाई खबरी के नाम से भी बुलाते थे। जेनाबाई ने तीन दशक पहले किसी के साथ हुई मुलाकात में कहा था कि मैंने मक्का में २२ डॉन को एकत्रित करके सबके बीच में समझौता कराया था और आगे बताते हुए उसने कहा कि अगर मैं ने मक्का में की हुई इस मुलाकात में समझौता नहीं कराया होता तो मुंबई में कई हत्याएं होती । लेकिन मैंने दाउद को कहा था कि, 'बेटा, लड़ाई-झगड़ा करने में कोई फायदा नहीं है और उसने मेरी यह बात मान ली थी'' ।

चार दशक पहले मुंबई में और एक लेडी बूटलेगर थी – एलिजा ब्रेझन। एलिजा उसके पति और दो संतान – एक बेटा और एक बेटी के साथ अपना जीवन व्यतीत करती थी । एक ट्रक हादसे में उसके पति की मौत होने के बाद एलिजा ने अपने परिवार के निर्वाह के लिए छोटे पैमाने पर देसी दारू का गैर कानूनी धंधा शुरू किया । बाद में उसने धंधे का विस्तरण करके उसने और ज्यादा आदमी को काम पर रखना शुरू किया। अब एलिजा को बूट लेगर के तौर पे मबलक कमाई होने लगी थी लेकिन वह पुलिस की नजर में आ गई और मुंबई पुलिस विजीलेंस डिपार्टमेंट के आसिस्टेंट कमिश्नर ओफ पुलिस मिनू इरानी ने फरवरी, १९८८ में उनके अड्डे पर रेड डालकर गिरफ्तार करके उसको जेल में बंद कर दिया ।

ऐसी ही एक औरत और लेडी क्रिमिनल शांताबाई मरिअप्पा थी । 'मैडम'के नाम से जानेवाली शांताबाई मुंबई में बड़े पैमाने पर वेश्यालयों चलाती थी। जेनाबाई की तरह ही शांताबाई को भी उसके पति ने छोड़ दिया था। शांताबाई सिर्फ १८ साल की आयु की थी तब उसका पति उसको अपने तीन बच्चों के साथ छोड़ कर चला गया था। उसे समय उनकी एक सहेली सोना ने उसको कहा कि तूं भी मेरी तरह देह व्यापार में आ जा और शांताबाई ने कोई दूसरा रास्ता न मिलने पर उसकी बात को मानकर सिर्फ १८ साल की आयु में जबरन मुंबई के कुख्यात फोकलेन रोड पर एक वेश्यालय में, एक वेश्या का जीवन व्यतीत करना शुरू कर दिया था। लेकिन उसके बाद थोड़े ही समय में उसने कुछ बड़ा करना चाहा और उसने खुद अपना ही वैश्यालय शुरू कर दिया। बाद में वह अपना यह गंदा बढाती गई और एक समय पर तो मुंबई के फोकलेन रोड पर जितने भी वेश्यालय चलता था उसमें से ७०% पर उनकी पक्कड़ थी। शांताबाई पुलिसको हफ्ता देती थी

> **आपको जान के आश्चर्य होगा कि उस समय के करीमलाला, हाजी मस्तान, वरदराजन मुदलियार जैसे माफिया सरगना जेनाबाई के पास मश्वरा लेने के लिए आते थे**

और राजनेताओं के साथ भी उसके संबंध अच्छे थे। इस कुख्यात एरिया में शांताबाई की पक्कड अच्छी थी । चुनाव के वक्त राजकीय दलों वोट पाने के लिए उसकी मदद लेते थे और शांताबाई को जो कोई प्रत्याशी अच्छा लगे और उसके इस गैर कानूनी वैश्यालयों के काम में आए ऐसे व्यक्ति को वहां पर ठहरी बड़ी संख्या में वैश्या का वोट दिला देती थी।

पिछली सदी में ऐसी ही एक महिला क्रिमिनल थी, लक्ष्मीबाई। वह एक कुख्यात स्लम लॉर्ड थी । और सहार विलेज के आसपास के विस्तारों में उसकी खुद की अनेको चाल थी। लक्ष्मीबाई इस विस्तार के किराएदारों से जबरन पैसे वसूलती थी। उसने अनेको गैर कानूनी बांधकाम काम किए थे। बाद में मुंबई पुलिस की नजर में वो आ गई थी और लक्ष्मीबाई को गिरफ्तार करके जेल में बंद कर दिया गया था।

और एक लक्ष्मी की बात भी जानने लायक है। मुंबई के कल्याण डोंबिवली उपनगरो में डॉन के नाम से कुख्यात हुआ सूरेश मंचेकर की माता लक्ष्मी मंचेकर को क्या नाम पर गैर कानूनी जबरन पैसा वसूली से लेकर हत्या समेत अनेको को गुनाहों का आरोप लगा था और एफआईआर हुइ थी। लक्ष्मी मंचेकर के कहने पर मंचेकर गैंग के शूटर्स अमोल विचारे और शशिकांत बिरजे ने बिल्डर महेंद्र खानविलकर कि ऑफिस में जाकर उनके शरीर को गोलियों से छल्ली करके हत्या कर दी थी। इस केस में लक्ष्मी मंचेकर को आजीवन कारावास की सजा हुई थी।

दोस्तों,मुंबई में ऐसी ही और कई लेडी माफिया डॉन थी लेकिन उनकी बात हम बाद मे समय मिलने पर करेंगे ।

भारतीय सेना के प्रथम फील्ड मार्शल

सैम मानेक शॉ

आजादी के बाद हमारी स्वतंत्र सेना में कई वीर पराक्रमी अफसर और जवानों ने अपने पराक्रमो से इतिहास लिखा है और वीरता की गाथा बनाई है। आज हम बात करेंगे एक ऐसे ही पराक्रमी और बहादुर सेना अध्यक्ष सैम होरमुशजी फेमजी जमशेदजी मानेक शॉ की। जिसे लोग सैम बहादुर के नाम से ज्यादा जानते हैं।

सैम बहादुर का जन्म ३ अप्रैल १९१४ के दिन हुआ था। १९७१ में भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान भारतीय सेना के अध्यक्ष थे और फील्ड मार्शल का पद धारण करने वाले पहले भारतीय सैन्य अधिकारी थे।

मानेक शो ने अपने पहले ही प्रयास में सैन्य की कसौटी पास कर ली थी।

अनसंग हीरो...

◆ शैलेष ठक्कर-बरोडा ◆

१ अक्टूबर १९३२ को ४० केडेटो की पहली भरती का हिस्सा बने। उन्हें १२वीं फ्रंटियर फोर्स रेजीमेंट की चौथी बटालियन में नियुक्त किया गया। १९४८ में भारत-पाकिस्तान युद्ध और हैदराबाद संकट के दौरान मनेक शो को योजना बनाने की भूमिका सोंपी गई थी। और परिणाम स्वरूप उन्होंने कभी पैदल सेना बटालियन की कमान नहीं संभाली। सैन्य संचालन निर्देशालय में सेवा के दौरान उन्हें ब्रिगेडियर के पद पर पदोन्नत किया गया था। वो १९५२ में १६७ इन्फेंट्री बिग्रेड के कमांडर बने और १९५४ तक इस पद पर रहे। जब उन्होंने सेना मुख्यालय में सैन्य प्रशिक्षण के निर्देशक का पदभार संभाला।

१९७१ के युद्ध में आर्मी चीफ मानेक शो ने अद्भुत नेतृत्व क्षमता और रणनीति का कौशल दिखाकर पाक सेना को समर्पण करने के लिए मजबूर कर दिया था। ४५००० से ज्यादा पाकिस्तान सैनिक और उससे भी ज्यादा नागरिकों को बंदी बना लिया था।

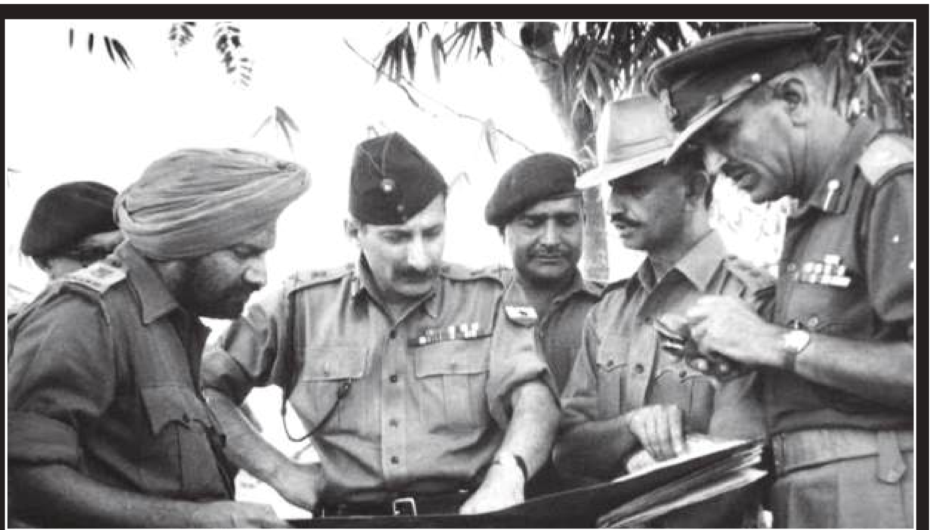

रॉयल कॉलेज ऑफ डिफेंस स्टडीज में उच्च कमान की शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्हें २६ वें इन्फेंट्री डिवीजन का जनरल ऑफिसर कमांडिंग नियुक्त किया गया। उन्होंने डिफेंस सर्विसेज स्टाफ कॉलेज के कमांडर के रूप में भी कार्य किया। १९६३ में मानेक शो को सेना कमांडर के पद पर पदोन्नत किया गया और उन्होंने पश्चिम कमान संभाली। १९६४ में उनका स्थानांतरण पूर्वी कमान में हो गया।

मानेक शो पहले ही डिवीजन (सैन्य), कोर (सैन्य), और क्षेत्रीय स्तरों पर सैनिकों की कमान संभालने के बाद १९६९ मे सेना के सातवें प्रमुख बने। उनके कमान के तहत भारतीय सेना ने १९७१ के भारत-पाकिस्तान युद्ध में पाकिस्तान के खिलाफ विजयी अभियान चलाया जिसके परिणाम स्वरूप दिसंबर १९७१ में बांग्लादेश का निर्माण हुआ। उन्हें भारत के दूसरे और तीसरे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्म विभूषण और पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। उनकी सक्रिय सैन्य करियर द्वितीय विश्व युद्ध से आरंभ होकर चार दशकों और पांच युद्ध तक विश्तृत रही।

१९७१ के युद्ध में आर्मी चीफ मानेक शो ने अद्भुत नेतृत्व क्षमता और रणनीति का कौशल दिखाकर पाक सेना को समर्पण करने के लिए मजबूर कर दिया था। ४५००० से ज्यादा पाकिस्तान सैनिक और उससे भी ज्यादा नागरिकों को बंदी बना लिया था।

मानेक शॉ के लिए कोई रिश्ते से उपर लश्करी शिस्त थी। उसकी लश्करी शिष्तता का परिचय इस घटना से होता है। १९६२ के युद्ध के बाद जवाहरलाल नेहरू

सरहदी इलाकों में गए वहां ऑपरेशन रूम था। इस रूम में जवाहरलाल के साथ इंदिरा गांधी भी रूम में जा रहे थे तब उनको मानेक शो ने उधर ही रूम के बाहर रोक कर कहा कि, ''मैडम आपने गुप्तताकि सौगंध नहीं ली है इसलिए आप यह रूम के अंदर नहीं जा सकते।'' ऊस समय इंदिरा गांधी कोई भी पद पर नहीं थे।

पारसीओ में से बड़े समुदाय के लोगों का मूल गुजरात में होता है वैसे ही सैम बहादुर भी मूल रूप से गुजरात से थे। उनके दादा फरामजी वलसाड, गुजरात में शिक्षक थे। मानेक शो पंजाबी, नेपाली, हिंदी, अंग्रेजी जैसी विविध भाषा जानते थे।

उन्होंने सैन्य के गौरव को बढाया था। मेनन जैसे हमारे देश के कई राजकीय नेताओं को ऐसा लगता था कि सेना अध्यक्ष को किसी भी समय ऑर्डर दे सकते हैं लेकिन मानेक शॉ ने इस बात का खंडन किया और कहा कि सैन्य राजकीय उद्देश्य को पार पाडने के लिए नहीं है, राष्ट्र की रक्षा के लिए है।

मानेक शो की लगभग ४ दशकों की करियर के बाद १५ जनवरी, १९७३

सैम मानेक शॉ के अलग-अलग आयु के फोटो

को सक्रिय सेवा से निव्रुत हुए। वह अपनी पत्नी सिल्लू के साथ वेलिंगटन छावनी के बगल के नागरिक शहर कन्नूर में बस गए जहां उन्होंने अपने केरियर के पहले डिफेंस सर्विसेज स्टाफ कॉलेज के परमेनन्ट के रूप में काम किया था।

२७ जून,२००८ को ९४ वर्ष की आयु में तमिलनाडु के वेलिंगटन के सैन्य के अस्पताल में निमोनिया की वजह से उनकी मृत्यु हो गई।

१९७१ में फील्ड मार्शल सेम बहादुर के नेतृत्व में हासिल की गई जीत की याद में हर साल १६ दिसंबर को विजय दिवस मनाया जाता है।१६ दिसंबर, २००८ को तत्कालीन राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल द्धारा सेम मानेक शो को उनके फील्ड मार्शल की वर्दी में दर्शानेवाला एक डाक टिकट भी जारी किया था।

सैम मानेक शो पर बॉलीवुड में मेघना गुलजार द्धारा एक फिल्म अभी बनाई गई है जो १ दिसंबर, २०२३ को रिलीज हुई है।

हमारे इस पराक्रमी 'सैम बहादुर' को सो.... सो..... सलाम। जय हिंद।

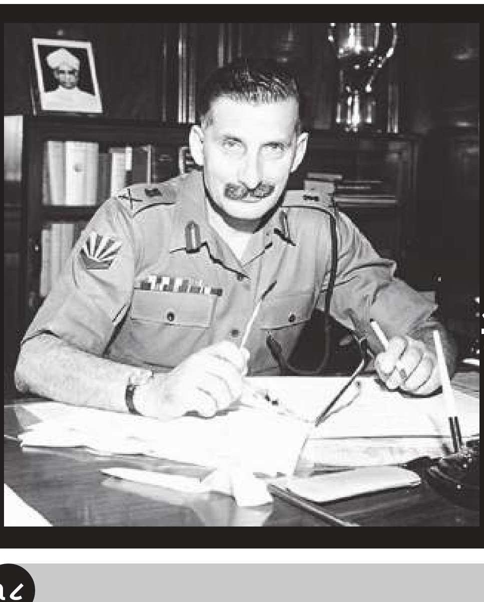

मानेक शो पहले ही डिवीजन (सैन्य), कोर (सैन्य), और क्षेत्रीय स्तरों पर सैनिकों की कमान संभालने के बाद १९६९ मे सेना के सातवें प्रमुख बने। उनके कमान के तहत भारतीय सेना ने १९७१ के भारत-पाकिस्तान युद्ध में पाकिस्तान के खिलाफ विजयी अभियान चलाया जिसके परिणाम स्वरूप दिसंबर १९७१ में बांग्लादेश का निर्माण हुआ।

क्राईम फोर्स मीडिया
सुरत ब्युरो ओफिस शुरु करने के लीए
आप दोनो को हार्दिक बधाई

रामजीभाई नागजीभाई पानसेरीया
मो.97125 74032

विनोदकुमार माधाभाई लावरी
मो.98251 12244

प्लोट नं.1, अमुल सोसायटी, श्रीराम मार्बल के पास, भटार, सुरत.

-:: शुभेच्छक ::-

ओम. ओन. डिजीटल सेईफ
सुरत

स्कोलर कलासीस
सुरत

Krishna
Beach Resorts

- Located at World Famous Nagoa Beach, Diu
- Total 36 Rooms (Sea View and Garden View) with Suites Rooms with Splash Pool and Balcony & Super Executive with Splash Pool.
- Perfect Place for Destination Weddings & Beach Vacation.
- Party Plot with 200 Person Capacity.
- Banquet Hall with 120 Person Capacity.
- Multi Cuisine Family Bar and Restaurant.
- Car Parking Facilities in our premises.
- Garden & Outdoor Swimming Pool.

Krishna Beach Resorts

NAGOA BEACH,
DIU - 362 520 (UT) INDIA
Mo.:- +91 9687675347
Email: contact@krishnabeachresorts.com
Website: www.krishnabeachresorts.com

CRIME FORCE
सत्यमेव जयते

क्राईम फोर्स
मीडिया को
हार्दिक बधाई...

महेशभाई
अरजणभाई ठक्कर (अदा)

अध्यक्षश्री
भारतीय व्यापार मंडळ-गुजरात राज्य

पूर्व अध्यक्षश्री
राधनपुर नगरपालीका

अध्यक्षश्री
राधनपुर व्यापारी मंडळ

आर्यभूमि-बी/७०३, जोधपुर चार रस्ता,
सेटेलाइट, अहमदाबाद

हमारे देश में डेढ़ करोड नाबालिक बच्चे शराब और ड्रग्स के गुलाम !

कवर स्टोरी

◆ हृषिकेश बोरसे-मुंबई ◆

पूरे विश्व में आधुनिकता से मानव जाति की जीवन शैली में सुधार आया है। नए-नए अविष्कारो की शोध से मानवीय जीवन सवलत भरा हो गया है । आज मानवी अपने हाथ में मोबाइल फोन या कंप्यूटर, लैपटॉप से पूरी दुनिया में क्या चल रहा है वह जान लेता है। दूसरी ओर से देखे तो यह सुविधा बढ़ने और जिंदगी यंत्रवत हो जाने से मानवी २४ घंटे भागदौड़ में लगा रहता है और अपने ही परिवार के साथ समय निकाल के जीवन जीने की असली खुशी की पलें गवाँ देता हैं । परिवार का निभाव करने के लिए परिवार के कई लोग को काम करना पड़ता है और अब तो हमारे देश में महिलाएं भी कमाने लगी है। घर में माता-पिता दोनों जब कमाने के लिए काम पर जाते हैं तब घर में रहे बच्चे की देखभाल सही तरीके से नहीं हो सकती हे। बच्चों के लिए सही समय नही निकाल सकने की वजह से बच्चों की परवरिश भी ठीक तरीके से नहीं कर पाते हैं। इसकी सीधी असर बच्चों के दिमाग पर होती है। छोटी उम्र में ही वह दिमाग से ज्यादा गंभीर और परिपक्व हो जाते हैं। तो कई बार बूरी संगत में फंस जाते हैं और अपनी जिंदगी बर्बाद कर देते हैं। बुरी संगत से वह शराब,ड्रग्स,चोरी, गंदी सोच के आदती हो जाते हैं । आज हम हमारे देश के बच्चों में बढता शराब और ड्रग्स की आदतो के बारेमें बात करेंगे।

पहले हमारे देश में पाकिस्तान और अफगानिस्तान से ड्रग्स की ज्यादातर हेरफेर होती थी। लेकिन जब से भारत ने एलओसी पर व्यापार निषेध किया और पंजाब बॉर्डर पर कड़ी निगरानी रखनी शुरू की तब से वहां से हमारे देश में ड्रग्स लाना संभव नहीं होने से अब ड्रग्स माफिया सौराष्ट्र के समुद्र तट के रास्ते से इसकी तस्करी कर रहे हैं। २०१७ में हेनरी नाम के कारगोशीप में से पोरबंदर से ३१० किलोमीटर दूर के समुद्र में से भारतीय कोस्टगार्ड ने ४५०० करोड़ का हेरोइन समेत ड्रग्स जप्त किया था। उस प्रकरण में हाल में ही न्यायालय द्वारा ६ गुनहगारों को २० साल की कड़ी जेल की सजा सुनाई है। कुल मिला के १३ गुनेहगार थे जिसमें से ३ गुनेहगारो की न्यायिक कार्यवाही के दौरान ही मौत हो गई थी। दूसरे ४ गुनहगारों को १० साल की सजा का फैसला सुनाया गया था।

हमारे देश में ज्यादातर पाकिस्तान, अफगानिस्तान और म्यानमार से ड्रग्स की हेरा फेरी होती है। हमारा देश भौगोलिक तरीके से गोल्डन क्रिसेंट और गोल्डन ट्रायंगल नाम से जाने जाते विस्तार के देशों के साथ जमीनी और समुद्र मार्ग से जुड़ा हुआ है। गोल्डन क्रिसेंट मतलब इरान,पाकिस्तान और अफगानिस्तान। यह तीन देशों में अफीम की अवैध खेती और हेरोइन के उत्पादन बड़े पैमाने पर हो रहे हैं। सब जानते हैं कि अफगानिस्तान की अर्थव्यवस्था पूरी तरफ से अफीम की खेती और उसके अवैध व्यापार पर ही आधारित है। गोल्डन ट्रायंगल यानी के म्यानमार,लाओस और थाईलैंड। जिसमें म्यानमार के साथ हमारी १६४३ किलोमीटर लंबी सरहद है। म्यानमार से नॉर्थ इस्ट में अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर और मिजोरम के जरिए ड्रग्स की हेरफर की जाती है और वहां से हमारे पूरे देश में उसकी सप्लाय होती है।

पहले हमारे देश में पाकिस्तान और अफगानिस्तान से ड्रग्स की ज्यादातर हेरफेर होती थी। लेकिन जब से भारत ने एलओसी पर व्यापार निषेध किया और पंजाब बॉर्डर पर कड़ी निगरानी रखनी शुरू की तब से वहां से हमारे देश में ड्रग्स लाना संभव नहीं होने से अब ड्रग्स माफिया सौराष्ट्र के समुद्र तट के रास्ते से इसकी तस्करी कर रहे हैं।

हमारे देश में ड्रग्स का दूषण बहुत ही रफ्तार से बढ़ता जा रहा है। इसके साथ-साथ अवैध नशीले पदार्थों का व्यापार भी रफ्तार पकड़ रहा हैं। हम कई बार सुनते हैं या जानते हैं कि हमारे देश के भिन्न भिन्न राज्यों में कानूनी एजेंसीयां द्वारा करोड़ों का ड्रग्स का जत्था जप्त किया जाता है। यह सब करोड़ों रुपए का ड्रग्स का व्यापार देखते ही आम आदमी को ईतना तो समझ में आ जाता है की देश में यह नशीली चीजों का उपयोग किस हद तक जा पहुंचा है। कुछ सतावार तरीके से जो आंकड़े जाहिर हुए हैं उसे देखते ही पता चल जाता है कि हमारे देश में शराब और नशीली चीजों का सेवन चिंताजनक हद तक बढा है और उसका अवैध व्यापार जीस तरह से बढ़ता है जा रहा है वह हमारे देश के लिए खतरे की घंटी समान है। उसमें भी खास तौर पर १० से १७ साल की आयु के बच्चों में शराब और ड्रग्स का सेवन बहुत ही चिंताजन्य है और हमें गंभीर रूप से सोचने के लिए मजबूर करते हैं। भारत सरकार के सोशल जस्टिस एंपावरमेंट मंत्रालय ने २०१९ में जाहिर किए हुए रिपोर्ट के मुताबिक भारत की १४% आबादी यानी के १६ करोड लोग शराब के व्यसनी हो चुके हैं। जिसमें से ३०% लोग देशी शराब और ३०% लोग स्पिरिट से बनने वाले कंट्री मेड शराब का सेवन करते हैं। देखनेलायक बात यह हे की इस आंकड़े में कभी-कभी मौज मस्ती में शराब सेवन करनेवाले का समावेश नहीं होता। हमारे

देश में ६ करोड लोग नशीले पदार्थों के सेवन से गंभीररूप से शारीरिक और मानसिक बीमारियों से पीड़ित होते हैं। शराब के सेवन में महत्तम व्यसनी लोगों वाले राज्यों को देखे तो छत्तीसगढ़ की आबादी के ३५.६% त्रिपुरा में ३४.७% पंजाब मे २८.५% और अरुणाचल प्रदेश और गोवा में आबादी के २८% लोग शराब के व्यसनी हो चुके हैं। यूपी में ४.२ करोड लोग, पश्चिम बंगाल में १.४ करोड़ और एमपी में १.२ करोड लोग शराब के पक्के व्यसनी हो चुके हैं। पंजाब,त्रिपुरा और छत्तीसगढ़ में ५०% से ज्यादा पुरुषों शराब का नियमित रूप से सेवन करते हैं। अरुणाचल प्रदेश की १५.३% और छत्तीसगढ़ की १३.७ % महिलाए भी शराब का नियमित रूप से सेवन करती है।

हमारे पूरे देश की बात करें तो ३.५ करोड़ लोग शराब के अलावा दूसरे नशीले पदार्थों के गुलाम बन चुके हैं। जिसमें से ज्यादातर भांग, गांजा, चरस, अफीम और हेरोइन का है। १.१८ करोड़ लोग निंद की दवाइयां का सेवन करते हैं। २.५ करोड़ लोग अफीम एवं पाउडर के स्वरूप में अशुद्ध हेरोइन ब्राउन पाउडर का नशा करते हैं। यह नशीला पदार्थ का सबसे ज्यादा सेवन यूपी, पंजाब, हरियाणा, दिल्ही, महाराष्ट्र, राजस्थान, आंध्र प्रदेश, गुजरात और नॉर्थ ईस्ट राज्यों में होता है। यूपी में १ लाख लोग, पंजाब में करीबन ९०,००० और दिल्ही में ८६,००० लोग समेत देश में कुल मिलाकर ८ लाख लोग इंजेक्शन के जरिए ड्रग्स का सेवन करते हैं। जिसमें से २७% लोग और लोगों के साथ सिरिंज साझेदारी

करते हैं। इसलिए एचआईवी होने का खतरा बढ़ जाता है। १८ से ७४ वर्ष के आयु जुथ के २.९२ करोड़ लोग भांग, १.९० करोड लोग अफीम, १० लाख लोग कोकेन, ४० लाख लोग उत्तेजना पैदा करने वाले एम्फेटेमिन का सेवन करते हैं।

हमारे देश में ड्रग्स का दूषण बहुत ही रफ्तार से बढ़ता जा रहा है। इसके साथ-साथ अवैध नशीले पदार्थों का व्यापार भी रफ्तार पकड़ रहा हैं। हम कई बार सुनते हैं या जानते हैं कि हमारे देश के भिन्न भिन्न राज्यों में कानूनी एजेंसीयां द्वारा करोड़ों का ड्रग्स का जत्था जप्त किया जाता है। यह सब करोड़ों रुपए का ड्रग्स का व्यापार देखते ही आम आदमी को ईतना तो समझ में आ जाता है की देश में यह नशीली चीजों का उपयोग किस हद तक जा पहुंचा है।

अब १० से १७ साल की आयु के नाबालिक/किशोरो की बात करें तो इस आयुजुथ के ३० लाख बच्चे/ किशोरों शराब का सेवन करते हैं। पंजाब में ६%, पश्चिम बंगाल में ३.९% और महाराष्ट्र में ३.८% नाबालिक शराब का सेवन करते हैं। ४० लाख नाबालिक अफीम और २० लाख बच्चे भांग के व्यसनी है। ५० लाख नाबालिक सिगरेट के जरिए का या सूंघकर हेरोइन का नशा करते हैं। जब की २ लाख बच्चों कोकेन और ४ लाख बच्चे एम्फेटेमिन पदार्थो का बेरोकटोक उपयोग करते हैं। वैसे देखे तो कुल मिलाकर एक १.४८ करोड़ किशोर नशीले पदार्थों के गुलाम हो चुके हैं। बच्चों में ऐसे व्यसन के बारे में देखे तो सबसे ज्यादा यूपी, एमपी, महाराष्ट्र, दिल्ही, पंजाब, पश्चिम बंगाल और हरियाणा में ३५,००० और उसके अलावा राज्यो में २.१ लाख नाबालिगो पाउडर को सूंघ के नशा करते हैं।

यह सब आंकड़े वास्तव में हमारे देश के

लिए बेहद हानिकर्ता है। नशीली दवाईओ की समस्याओं से निपटने हेतु सरकार को मौजूदा कानून के प्रवर्तन को सख्त बनाना होगा। इसके साथ ही निवारक उपायों के प्रभावी उपयोग को भी सुनिश्चित करना होगा। इसके साथ ही अफीम के खेती एवं अवैध रूप से संलग्न किसानो के लिए वैकल्पिक फसल योजना की शुरुआत करनी होगी। इस संदर्भ में झारखंड राज्य द्वारा अवैध अफीम उत्पादको हेतु शुरू की गई आजीविका योजना बेहद उल्लेखनीय है। इस के साथ ही अंतरराष्ट्रीय सहयोग और समन्वय को भी मजबूत करने की दिशा में ठोस कदम उठाने होंगे। सूचना और सर्वोत्तम तरीकों से आदान-प्रदान हेतु संयुक्त राष्ट्र मादक पदार्थ एवं अपराध कार्यालय तथा इंटरपोल जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ साझेदारी को मजबूत करना होगा। नवीन प्राद्योगिकी जैसे बिग डाटा और एनालिटिक्स ट्रैफिकिंग नेटवर्क की पहचान तथा ट्रेक करने, ड्रग मूवमेंट की निगरानी करने और ड्रग्स के उपयोग व तस्करी से संबंधित गतिविधियों की पहचान करने पर जोर देना होगा। उसके साथ ही एक ऐसी ऑनलाइन रिपोर्टिंग प्रणाली विकसित करनी होगी के जहां नागरिक नशीली दवाओं दुरुपयोग तथा तस्करी की गतिविधियों की वास्तविक समय में रिपोर्ट कर सके।

यह सब आंकड़े वास्तव में हमारे देश के लिए बेहद हानिकर्ता है। नशीली दवाईओ की समस्याओं से निपटने हेतु सरकार को मौजूदा कानून के प्रवर्तन को सख्त बनाना होगा। इसके साथ ही निवारक उपायों के प्रभावी उपयोग को भी सुनिश्चित करना होगा। इसके साथ ही अफीम के खेती एवं अवैध रूप से संलग्न किसानो के लिए वैकल्पिक फसल योजना की शुरुआत करनी होगी।

यह दूषण के बारे में समाज के लोगों के बीच में जाकर जागृतता बढ़ाने की जरूरत है। नशीले पदार्थों के सेवन से होते नुकसान के बारे में स्कूल और कॉलेज में थोडे थोड़े समय पे कार्यक्रमों से भी लोगों को ऐसे नशीले पदार्थों के व्यसन से दूर रखा जा सकता है। यह दूषण सिर्फ सजा देने से नष्ट नहीं हो सकता। व्यसनियो को हेल्थ और वेलफेयर सर्विस मिले वह भी इतना ही आवश्यक है। इस दूषण को खत्म करने के लिए हर एक राज्य में जिल्ला, तालुका और ग्रामीण स्तर पर व्यसन मुक्ति के कार्यक्रम करके ऐसे व्यसनियों प्रति हमदर्दी जताते हुए ऐसे दूषण से मुक्त करना होगा। वेसे देखा जाए तो ऐसे व्यसनी लोग भी हमारे समाज के एक हिस्सा ही है। इस बारे में प्रशासन को धैर्य, कुशलता और गंभीरता से इसके बारे में योग्य और जमीनी स्तर पर कदम उठाना आवश्यक है। अफगानिस्तान में जब से तालिबान सरकार बनी तब से वाया पाकिस्तान भारत में ड्रग्स घुसाने की घटना में वृद्धि आई है। इसलिए सिर्फ सरकार की ही नहीं हमारे सब की यह जिम्मेदारी बढ़ जाती है। आखिरकार आज के बच्चे / नाबालिगो ही हमारा भविष्य है और कहते हैं ना कि जिस देश में युवा धन का मानसिक, शारीरिक तौर पर तंदुरस्त हे वह देश, उसका समाज भी तंदुरुस्त रहता है और हमारे समाज के बच्चे/नाबालिगो को ईस नशीले पदार्थों के व्यसन से दूर रहे इसके लिए हमें और हमारे पूरे समाज को सतर्क रहना आवश्यक है।

देश की अनेक समस्याओं का सचोट निवारण

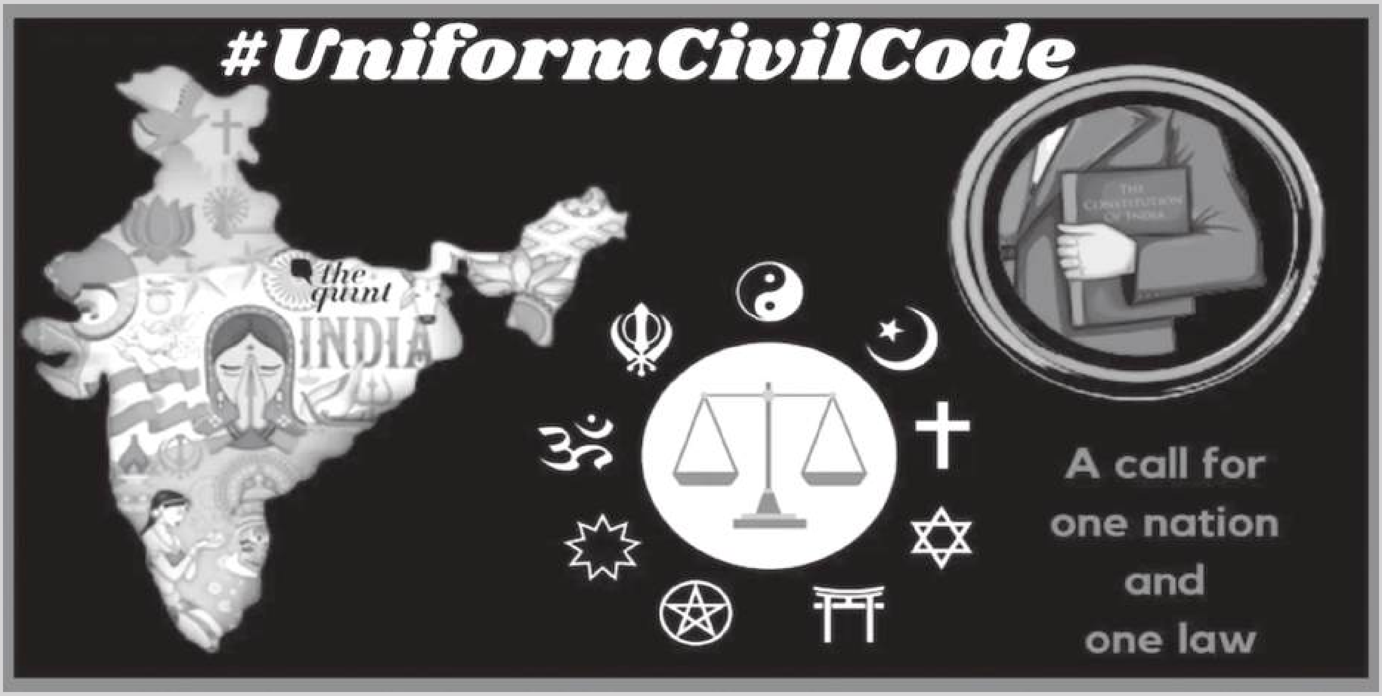

समान नागरिक संहिता

अपने देश में अनेक धर्म का अस्तित्व है। विभिन्न जाति के लोग अपने-अपने धर्म को मानते हैं। हमारे देश में भाषाएं भी अनेक बोली जाती है। देश में अलग-अलग राज्यों में लोग अलग-अलग भाषाएं बोलते हैं। हमारा देश यानी अनेकता में एकता। हमारा देश धर्मसहिष्णु है यहां सब धर्म को समान माना जाता है और सब धर्मों का आदर करना सिखाया जाता है।

२०१४ से जब से भाजपा सरकार केंद्र में आई है तब से देश के कानून में कई बदलाव आए हैं। अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण, कश्मीर को खास दर्ज़ा देनेवाली संविधान की धारा ३७० की नाबूदी और समान सिविल कोड को लागू करना। यह तीन वायदे भाजपा ने अपने चुनाव अभियान के दौरान दिए थे। अब जब भाजपा समान सिविल कोड की बात करती है तो उसमें कुछ गलत नहीं है।

वक्त का तकाजा

◆ लक्ष्मी विजयते-अमदावाद ◆

हमारे देश में समान सिविल कोड के अमलीकरण का मुद्दा लगभग पूरे साल चलता रहता है। किसी ने किसी बहाने देश में कहीं ना कहीं यह मुद्दा चर्चा में रहता ही है। समान सिविल कोड भाजपा की विशिष्ट पहचान जैसे मुद्दों में से एक है। भाजपा ने १९८० के दशक में तीन वायदे करके हिंदुत्व की लहर खड़ी की थी। अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण, कश्मीर में से धारा ३७० की नाबूदी और समान सिविल कोड का अमलीकरण ये तीन वादे भाजपा के खास वादे थे।

उत्तराखंड के सी.एम. धामी ने समान सिविल कोड की अमलवारी के लिए एक कमेटी का गठन भी कर दिया है और कहा है

कि कमेटी का रिपोर्ट आने के बाद राज्य में समान सिविल कोड की अमलवारी की जाएगी। धामी की यह सब बातों का कांग्रेस के कपिल सिब्बल और एआईएमआईएम के असदुद्दीन ओवैसी ने विरोध किया है। ओवैसी का कहना है कि संविधान की धारा २९ देश के सभी नागरिक या समूह को अपनी संस्कृति का पालन और उसका जतन करने का अधिकार देता है फिर भाजपा सरकार इस धारा को कैसे खंडित करता सकता है। ओवैसी ने यह भी याद दिलाया और कहा है कि १८वें लो कमीशन और ऑफ इंडिया ने भी कहा था कि समान सिविल कोर्ड के अमलीकरण की जरूरत नहीं है। विपक्षी दलों अलग-अलग अपनी विचारधारा और अपने फायदे के लिए समान सिविल कोड के अमलीकरण के बारे में बताते हैं। असल में समान सिविल कोड की जरूरत है कि नहीं इसकी कोई बात नहीं करते। सिब्बल ओर ओवैसी जैसे संविधान के जानकार नेता भी ऐसी वैसी बातें करते हैं। लेकिन हमारा संविधान समान सिविल कोड की स्पष्ट तरफदारी करता है ऐसी बात नहीं करते। ओवैसी ने चालाकी से संविधान की धारा २९ की बात करके बैठ गए लेकिन संविधान के मूलभूत सिद्धांतों की बात नहीं करते। सिब्बल ने यह मुद्दा उठाया कि राज्य समान सिविल कोड बना नहीं सकते, लेकिन ये बात नहीं की के कोई भी राज्य के लिए संसद समान सिविल कोड बना ही सकता है। हमारे देश में गोवा ही सिर्फ एक मात्र राज्य है जहां पर समान सिविल कोड अमल में है।

समान सिविल कोड का मतलब है देश के सभी नागरिकों के निजी जीवन के लिए एक समान कानून होना। हमारे संविधान में भी स्वीकार किया है की लोकशाही देश में सभी नागरिक समान होते हैं इसलिए निजी जीवन के लिए कानून भी एक समान ही होना चाहिए। संविधान की धारा ४४ स्पष्ट रूप से समान सिविल कोड की तरफदारी करती है। हमारे देश के संविधान के बुनियादी सिद्धांतों में समानता का सिद्धांत भी है। संविधान धारा ४४ देश के सभी नागरिकों को एक समान अधिकार देने का यकीन दिलाता है। लेकिन उसका अमल नहीं हुआ। यह अमल क्यों नहीं हुआ यह भी समझने की बात है। कांग्रेस ने अपनी वोट बैंक को सलामत रखने के लिए देश में समान सिविल कोड का अमल नहीं किया। आजादी के बाद अमल में आए संविधान में समान सिविल कोड की तरफदारी की गईं थी। इसके सामने मुसलमानों ने विरोध जताया था। उन लोगों ने ऐसा कहा कि हमारे धार्मिक अधिकारों पर हमला हो सकता है, इसलिए नेहरू सरकार ने अंग्रेजों ने बनाया १९३७ का शरीयत एक्ट चालू रखने का एलान कर दिया और मुसलमानों की शरणागति स्वीकार ली। मुसलमानों को खुश करने के लिए बाद में धर्म के आधार पर पर्सनल लो बना दिया। हिंदुओं के लिए हिंदू मैरिज एक्ट, मुसलमानों के लिए पर्सनल लो बोर्ड और अन्य धर्म लोगों के लिए अलग-अलग पर्सनल लॉ बनाने से समान सिविल कोड का ''अच्युतम केशवम'' हो गया। उस समय हमारे देश में जनसंघ विरोध पक्ष में था लेकिन वह कांग्रेस के सामने इतना मजबूत नहीं था इसलिए नेहरू ने उसकी एक भी बात नहीं मानी।

नेहरू सेकुलरिज्म के नाम पर मुसलमानों को खुश करने के रास्ते पर चले। उसके बाद की सरकारें भी मुस्लिम मतों की लालसा में उस रास्ते पर ही चली। १९९६ तक हमारे देश में कांग्रेस की या कांग्रेसी कल्चर से पैदा हुए राजकीय पक्षों की सरकारें केंद्र में रही और उन सरकारों ने मुस्लिमो की ही तरफदारी की इस वजह से संविधान के बुनियादी सिद्धांत को भूलाकर समान सिविल कोड को कोने पर रख दिया।

हमारे देश के लिए शर्मनाक बात तो यह है कि १९८२ में सुप्रीम कोर्ट ने समान सिविल कोड को अमल में लाने के लिए कड़ा निर्देश दिया था। लेकिन इंदिरा गांधी की सरकार ने इस कड़े निर्देश को ध्यान पे ही नहीं लिया और उसकी अवहेलना की। उसके बाद की सरकारों को भी ऐसा लगा कि समान सिविल कोड के अमल से मुसलमानों नाराज हो

२०१४ से जब से भाजपा सरकार केंद्र में आई है तब से देश के कानून में कई बदलाव आए हैं। अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण, कश्मीर को खास दर्ज़ा देनेवाली संविधान की धारा ३७० की नाबूदी और समान सिविल कोड को लागू करना। यह तीन वायदे भाजपा ने अपने चुनाव अभियान के दौरान दिए थे। अब जब भाजपा समान सिविल कोड की बात करती है तो उसमें कुछ गलत नहीं है।

समान सिविल कोड का मतलब है देश के सभी नागरिकों के निजी जीवन के लिए एक समान कानून होना । हमारे संविधान में भी स्वीकार किया है की लोकशाही देश में सभी नागरिक समान होते हैं इसलिए निजी जीवन के लिए कानून भी एक समान ही होना चाहिए । संविधान की धारा ४४ स्पष्ट रूप से समान सिविल कोड की तरफदारी करती है । हमारे देश के संविधान के बुनियादी सिद्धांतों में समानता का सिद्धांत भी है । संविधान धारा ४४ देश के सभी नागरिकों को एक समान अधिकार देने का यकीन दिलाता है । लेकिन उसका अमल नहीं हुआ यह अमल क्यों नहीं हुआ । यह भी समझने की बात है ।

जाएंगे और अपनी वोट बैंक चली जाएगी ऐसे डर से किसी ने सुप्रीम कोर्ट के इस कड़े निर्देश को नहीं माना और उसको अनदेखा करते रहे ।

सुप्रीम कोर्ट ने २३ अप्रैल, १९८५ के दिन भोपाल की शाहबानों को भरण पोषण देने का आदेश दे के ऐतिहासिक फैसला सुनाया था की कोर्ट ओफ क्रिमिनल प्रोसीजर की धारा १२५ सभी धर्म संप्रदाय और जाति के लोगों को समान तरीके से लागू होता है इसलिए शाहबानो को भरण पोषण मिलना चाहिए और सुप्रीम कोर्ट ने यह नाराजगी भी जताई कि अभी तक समान सिविल कोड की अमलवारी क्यों नहीं हुई । सुप्रीम कोर्ट के ही फैसले का मुस्लिम समाज के ठेकेदार लोगों ने जबरदस्त विरोध किया । उनके दबाव में आकर राजीव गांधी ने सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले को ही बदलने का नया कानून लागू कर दिया और थोड़ी सी आशा जो समान सिविल कोड को लागू करने की बची थी वह भी समाप्त हो गई । लेकिन एक बात यह हुई कि शाहबानो केस से लोगों में समान सिविल कोड के बारे में जागृतता आ गई । भाजपा का उदय और कांग्रेस के पतन के शुरुआत के लिए यह घटना जिम्मेदार है । अक्टूबर, २०१५ में सुप्रीम कोर्ट ने कड़क तरीके से निर्देश दीया की समान सिविल कोड को लागू करवाओ । सुप्रीम कोर्ट ने तीखा प्रहार करके कहा कि देश में सभी धर्मो के लोगों के लिए अलग-अलग कानून नहीं चलेगा ।

सुप्रीम कोर्ट ने यह भी कहा कि अगर सरकार समान सिविल कोड को लागू नहीं कर सकती तो सुप्रीम कोर्ट इसकी अमलवारी करवाएगी । मोदी सरकार ने २०१६ में लॉ कमीशन को समान सिविल कोड की अमलवारी के लगती बाबतों का अध्ययन करने को कहा लेकिन लॉ कमीशन को कार्यकाल समाप्त हो जाने से इस विषय में कुछ हुआ नहीं । इसके चलते सुप्रीम कोर्ट ने २०१९ में फिर से सवाल किया के देश में अभी तक क्यों समान सिविल कोड को लागू नहीं किया गया और कड़ा निर्देश दिया कि संविधान में दिया हुआ समानता का सिद्धांतकी अमलवारी हो ।

कोरोना की वजह से २०१९ के बाद सब कार्य अटक गए थे इसलिए इस मुद्दे पर भी कुछ हुआ नहीं लेकिन मोदी इसके बारे में बार-बार कह रहे हैं । मुस्लिम महिलाओं को ट्रिपल तलाक द्वारा दिया जाता तलाक का विरोधी कानून एक तरीके से देखे तो समान सिविल कोड की दिशा में उठाया गया एक कदम ही है ।

अब देश की मौजूदा सरकार की जिम्मेवारी है की समान सिविल कोड कि जल्द से जल्द अमलवारी कराएं क्योंकि इसकी अमलवारी से हमारे देश की अनेक समस्याओं का समाधान हो जायेगा!

इलेक्ट्रिक व्हीकल

पेट्रोल-डीजल का श्रेष्ठ विकल्प

हाल में हमारे देश और दुनिया में महंगाई तेज गति से बढ़ रही है। और दुसरी ओर हमारे देश में आम आदमी के लिए पहले के समय में जो चीजें लग्जरी आईटम्स गिनी जाती थी वह चीज अब सरल और सामान्य हो गई है, जैसे कि रेफ्रिजरेटर, एयर कुलर, ए.सी., मोटरकार, स्कूटर, ओवन, वॉशिंग मशीन, मोबाइल फोन विगैरे... विगैरे ऐसे कई साधने थे जो पहले आम आदमी नही खरीद पाता था, नहीं उसका उपयोग कर सकता था लेकिन अब यह सब चीजे वो अब सरलता से खरीदकर उसका उपयोग भी कर सकता है।

महंगाई बढ़ रही है लेकिन रोजाना उपयोग में आनेवाली चीजों के बिना मानवी सरलता से जीवन व्यतीत नहीं कर सकता और उनको ऐसी चीजों का जबरन उपयोग करना पड़ता है। ऐसी ही एक चीज है, पेट्रोल-डीजल। पेट्रोल-डीजल का दाम प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। देश में रोजाना अनगिनत वाहनों की खरीदी हो रही है और उनका उपयोग करने से यातायात और प्रदूषण की समस्याएं भी बढ़ती जा रही है।

यह सब बातें ध्यान में लेकर विश्व में विकासशील देशों ने पेट्रोल- डीजल के वाहनों के विकल्प के रूप में इलेक्ट्रिक वाहन (E.V.) की खोज करके लोग उसका ज्यादा से ज्यादा उपयोग करें इसलिए समाज में जागरूकता फैलाते हैं। विदेश के शहरोंमें इसी विषय में बहुत ही जबरदस्त तरीके से विकास हुआ है। वहां पर ये इलैक्ट्रिक व्हीकल सामान्य हो गए हैं।

लेकिन हमारे देश में E.V. का उपयोग अभी शुरुआती दौर में है। लेकिन थोड़े समय से हमारे देश में भी लोगों में जागरूकता आई है और इसके लिए माहिती जानकर उसको खरीदने की दिलचस्पी भी दिखाते हैं। हमारे देश में शुरुआत में ऐसे इलेक्ट्रिक व्हीकल की खरीदी बहुत ही कम संख्या में थी लेकिन अब हमारे देश की सरकार अभी यह उद्योग को प्रोत्साहित करते हुए उसकी रफ्तार पकड़ने के

पोल्युशन कंट्रोल

◆ विजय साणथरा-राजकोट ◆

लिए अनेकों प्रयास कर रही है। सरकार के ऐसे प्रयासों से अभी इलेक्ट्रिक वाहनों की बिक्री में इजाफा हुआ है और आनेवाले सालों में इस उद्योग में एकदम तेजी आएगी और उसका विस्तरण भी बड़े पैमाने पर होगा। सोसाइटी ऑफ मैन्युफैक्चरर्स ओफ इलेक्ट्रिक व्हीकल के मुताबिक देश में २०१५-१६ के साल में २२००० इलेक्ट्रिक व्हीकल की बिक्री हुई थी यह संख्या २०२०-२१ के साल में २,३६,००० हो गई मतलब की ५ साल में इलेक्ट्रिक व्हीकल की मार्केट में १० गुना वृद्धि हुई है।

टाटा मोटर्स के इलेक्ट्रिक व्हीकल सेगमेंट के एम.डी. शैलेश चंद्रा की बात माने तो २०२४ की साल इलेक्ट्रिक व्हीकल के लिए बहुत ही आशावादी पुरवार होने वाला है। केंद्र सरकार भी यह मानती है कि इलेक्ट्रिक व्हीकल इंडस्ट्रीज २०३० तक तेज गति से बढ़ेगा। टाटा मोटर्स समेत गई इलेक्ट्रिक इंडस्ट्रीज का मानना है कि २०२४ के बाद भी इलेक्ट्रिक व्हीकल की बिक्री ४०% की गति से बढ़ने की संभावना है। विशारद लोगों का मानना है कि यह रफ्तार २०३० तक रहेगी। २०३० के बाद सालाना एक करोड़ इलेक्ट्रिक व्हीकल की

बिक्री होगी।

इलेक्ट्रिक व्हीकल की बिक्री और उसका उपयोग करने के लिए हमारी सरकार के सामने कई समस्या आई हैं। इसमें सुधार आने से निश्चितरूप से इलेक्ट्रिक व्हीकल इंडस्ट्री तेज रफ्तार पकड़ेगी लेकिन अभी जो इलेक्ट्रिक व्हीकल के सामने पांच समस्याएं हैं उनको थोड़ा विस्तृत तरीके से जानते हैं।

चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर : इलेक्ट्रिक व्हीकल सेगमेंट के लिए हाल में सबसे बड़ी समस्या चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर की हे। हमारे देश में पब्लिक चार्जिंग सिस्टम बहुत ही कम मात्रा में है। सोसायटी आफ मैन्युफैक्चर ऑफ इलेक्ट्रिक व्हीकल रिपोर्ट के मुताबिक २०२१ तक सिर्फ १८०० चार्जिंग स्टेशन थे जिससे सिर्फ १६,२०० कारे ही चार्ज हो सकती थी। देश में जून २०२३ तक ८,७३८ परिचालन सार्वजनिक इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग स्टेशन स्थापित किए गए थे और दिसंबर २०२३ तक २०,००० तक चार्जिंग स्टेशन स्थापित करने का लक्ष्य था। अभी तक उसका रिपोर्ट उपलब्ध नहीं हुआ है। जबकि ग्रांट थॉर्नटन भारत- फिक्की के रिपोर्ट मुताबिक भारत में २०२६ साल तक करीबन रास्ते पर चलते २० लाख इलेक्ट्रिक व्हीकल के लिए करीबन चार लाख चार्जिंग स्टेशन की देश में मांग रहेगी।

माइलेज : इलेक्ट्रिक व्हीकल इंडस्ट्रीज के सामने सबसे बड़ी समस्या माइलेज की है। माइलेज मतलब एक बार चार्जिंग करने के बाद इलेक्ट्रिक व्हीकल कितना किलोमीटर चलेगा ? जब माइलेज की बात करते हैं तब लोगों टू व्हीलर और थ्री व्हीलर इलेक्ट्रिक व्हीकल की बैटरी एक बार फुल चार्ज हो जाए तो कम से कम १५० किलोमीटर के माइलेज की अपेक्षा

रखते हैं। जबकि यही माइलेज की मोटरकार के लिए २०० से ३०० किलोमीटर जितनी होने चाहिए। हमारे देश में इतनी माइलेज की कार बहुत कम मॉडल में उपलब्ध है। लेकिन देश की कई ऑटोमोबाइल्स इन्डस्ट्रीझ यह दिशा में तेज रफ्तार से संशोधन कर रही है और आशा रखते हैं कि नजदीकी वक्त में ही इस समस्या का भी समाधान हो जाएगा।

किंमत : इलेक्ट्रिक व्हीकल की बिक्री हमारे देश में शुरुआत के सालों में बहुत ही कम थी और इसमें बहुत धींरे से इजाफा हो रहा है। क्योंकि इलेक्ट्रिक व्हीकल के दाम बहुत ही ज्यादा है। इलेक्ट्रिक व्हीकल के दाम ज्यादा होने की सबसे बड़ी वजह है लिथियम आयन बेटरी की बहुत ही उंची कीमत। एक इलेक्ट्रिक कार की कुल दाम के करीबन ४० से ५० % तक दाम लिथियम आयन बेटरी (एसीसी) बेटरी का होता है। इलेक्ट्रिक व्हीकल में उपयोग में आनेवाली लिथियम बैटरी की एवरेज कीमत रु 5,00,000 से ज्यादा होती है। लेकिन जैसे-जैसे इसके लिए भी और संशोधन हो रहे हैं कि यह बेटरी में क्या सुधार किया जाए तो उसके दाम में गिरावट आ सकती है। हमारे देश और दुनिया में कई इंडस्ट्रीझ उसके बारे में लगातार संशोधन कर रही है।

बैटरी और स्पेयर पार्ट्स : इलेक्ट्रिक व्हीकल में उपयोग में आने वाले लिथियम आयन बैटरी के लिए हम पूरी तरह से उसकी आयात पर निर्भर है और उसके लिए हमें पूरी तरह से चीन पर निर्भर रहना पड़ता है। लिथियम के माईनिंग और उसके उपयोग में चीन पूरी दुनिया में अग्रीम देश है। बैटरी के अलावा उपयोग में आनेवाले और स्पेयरपार्ट्स भी हमारे देश में नहीं बनते हैं और उसकी पूरी तरफ से आयात करनी पड़ती है। लेकिन अब हमारी सरकार ने थोड़े समय पहले ही लिथियम आयन बेटरी का उत्पादन बढ़ाने के लिए बहुत सारे कदम उठाए हैं जिसकी वजह से देश में लिथियम आयरन बैटरी का उत्पादन करने वाली ऑटोमोबाइल्स इंडस्ट्रीज को सरलता रहेगी और वह आनेवाले सालों में इस समस्या का समाधान करने में सहायक बनेगी।

इलेक्ट्रिसिटी : जैसे जैसे इलेक्ट्रिक व्हीकल की चाहत लोगों में बढ़ने लगेगी तब इलेक्ट्रिसिटी की मांग अपने आप बढ़ जाएगी यह सच बात है । हमारे देश में करीबन ३/४ इलेक्ट्रिसिटी का उत्पादन कोयले से होने से इस क्षेत्र में विशारद लोगों को ऐसी आशंका है कि बैटरी की आयत की निर्भरता और दूसरी ओर इलेक्ट्रिसिटी की बढ़ती मांग से इलेक्ट्रिक व्हीकल में बिक्री में मुश्किल आ सकती है ऐसा भी हो सकता है कि लिथियम आयन बैटरी का ऐसा विकल्प ढूंढा जाए जिसमें उपयोगी केमिकल्स की कमी ना हो और रीसाइकलिंग कैपेसिटी भी अच्छी हो । ऐसी परिस्थितियों के बीच हमारे केंद्र सरकार ने इलेक्ट्रिक व्हीकल उद्योग में ढेखो प्रोत्साहित करने के लिए आधारभूत प्रयास किए हैं ।

पी.आई.एल.: केंद्र सरकारने शुरुआत में डोमेस्टिक ऑटो सेक्टर के लिए प्रोडक्शन लिंक इंसेंटिव स्कीम को जाहिर किया था । यह स्कीम २०२३ तक के ५ साल के लिए अमल में रही थी । जिसका फायदा इलेक्ट्रॉनिक फ्यूल सेल व्हीकल बनाने वाली इंडस्ट्रीज को हुआ और इसी वजह से इलेक्ट्रिक व्हीकल को प्रोत्साहन मिला ।

इनकम टैक्स में राहत: इलेक्ट्रिक व्हीकल की खरीदी के लिए २०१९ के बजट में सरकार ने व्यक्तिगत करदाताओंको कलम ए ८० इवीवी के तले तले इनकम टैक्स में बड़ी राहत की घोषणा की थी,जो साल २०२२- २३ के साल के लिए अमल में रही थी । इलैक्ट्रिक व्हीकल की खरीदी के लिए १ अप्रैल, २०१९ से ३१ मार्च, २०२३ तक मंजूर हो गई लोन पर १.५ लाख रुपए तक के ब्याज पर डिडक्शन का लाभ मिला था । लेकिन हाल में ही उद्योगो के मुद्दो के लिए काम करती संसद की स्थाई कमेटी ने इलैक्ट्रिक व्हीकल के लिए एक महत्वपूर्ण सिफारिश की हैं । उसके मुताबिक फेम २ (फास्टर एडॉप्शन और मैन्युफैक्चरिंग ऑफ़ इलेक्ट्रिकल व्हीकल फेस २) यह योजना मर्यादा २१ मार्च, २०२५ तक बढ़ाने का तय किया गया है । जिससे लोगों में इलैक्ट्रिक व्हीकल खरीदने के लिए चाहत बढ़ेगी ।

जीएसटी में कटौती/सब्सिडी: केंद्र सरकार ने इलैक्ट्रिक व्हीकल के जीएसटी में १२ %से ५ %की कटौती की थी और अनेको राज्यों ने भी इलैक्ट्रिक व्हीकल उद्योग को प्रोत्साहित करने के लिए अपने-अपने राज्यों में अनेको योजनाओ का एलान किया था । जिसमें मुख्यत राज्यों में इलैक्ट्रिक व्हीकल पर रोड टैक्स, रजिस्ट्रेशन फी में राहत दी गई थी । पहले इलैक्ट्रिक व्हीकल खरीदने पर सब्सिडी ५ साल केलिए मिलती थी । लेकिन अभी-अभी सरकार ने इलैक्ट्रिक व्हीकल पर मिलने वाले सब्सिडी को और ३ साल के लिए बढ़ाया है ।

इलैक्ट्रिक व्हीकल उद्योग एक महत्वपूर्ण मुकाम पर पहुंचनेवाला है । सूत्रों के मुताबिक जानकारी मिली है कि कई कंपनियां इलैक्ट्रिक व्हीकल की और तेजी से बढ़ रही है । इस साल में टेस्ला, बिवायडी समेत कंपनियां हमारे देश में अपने प्लांट की स्थापना करने वाली है । इसी वजह से इलैक्ट्रिक व्हीकल के सभी आयात होनेवाले पुर्जे सस्ते होंगे पी.आई.एल., स्पर्धा और नई टेक्नोलॉजी की वजह से इलेक्ट्रिक व्हीकल का दाम कम होगा और यह दाम ईंधनवाले वाहनों से सिर्फ १५% ही ज्यादा रहेगा । सरकार इलेक्ट्रीक कार में बैटरी स्वॅपिंग शुरू करने के लिये ऑटोमोबाइल्स कंपनी और बैटरी निर्माता के साथ मिलकर काम कर रही है । टू व्हीलर में बैटरी स्वेपिंग है । इसी वजह से टू व्हीलर करीबन ४० % तक सस्ता होने की संभावना है । हमारे देश में जैसे-जैसे चार्जिंग स्टेशन बढ़ेगा तब टू व्हीलर के दामों में कमी आएगी । इलैक्ट्रिक व्हीकल में ४० % दाम बैटरी का ही लगता है ।यह खर्च को कम करने के लिए बैटरी बनानेवाले इंडस्ट्रीज नई टेक्नोलॉजी पर आगे बढ़ रही है । टेस्ला ने लिथियम आईरन फास्फेट बैटरी का उपयोग चालू कर दिया है । बिवायडी सोडीयम आयरन बैटरी बनाने की दिशा में काम कर रही है, जो लिथियम से बहुत ही कम दाम में उपलब्ध होगी ।

हमारे देश में चालु सालमें डीजल पिकअप, लोडर जैसी क्षमता वाले इलैक्ट्रिक व्हीकल पिकअप का वक्त आने वाला है । उनके दाम भी हाल में मिल रहे इंधनवाले वाहन जितनी ही होगी । ईसी वजह से इलेक्ट्रिक व्हीकल के वाहनों में बहुत बदलाव आयेगा जिसके कारण रस्ते पर से बड़ी संख्या में डीजल पिकअप वैन दूर होंगे ।

अभी आने वाले वक्त में हमारे लिए इलैक्ट्रिक व्हीकल खरीदी पर बहुत सारी समस्याओं का समाधान होने वाला है । इससे इलैक्ट्रिक व्हीकल इंडस्ट्रीज को जरूर से फायदा होगा । हमारे देश के लोग भी इलेक्ट्रिक व्हीकल खरीदी के लिए कम परेशान होंगे और आसानी से खरीदने के लिए निर्णय ले सकेंगे । वैसे भी आनेवाले सालों में पेट्रोल - डीजल की कमी और उसकी कीमत में होता लगातार इजाफा, बढ़ता हुआ प्रदूषण जैसे समस्याओं के समाधान के लिए इलैक्ट्रिक व्हीकल ही सबसे श्रेष्ठ विकल्प है ।

स्वास्थ्य के लिए व्यक्ति को कितना नमक खाना चाहिए ?

स्वास्थ्य

◆ योगेन्द्र पंड्या-राजकोट ◆

आज के आधुनिक युग में हर एक व्यक्ति को रफ्तार से अपना कार्य करना पड़ता है। ऐसा नहीं करने पर वह दूसरों से पीछे रह जाता है। ऐसी यांत्रिक जिंदगी के कारण मानवी जिन्दगी का सच्चा सुख नहीं पा सकता। मानवी की जीवन शैली में बहुत ही सुधार आया है। वह अब सवलतभरी जिंदगी जी रहा है। क्योंकि जिंदगी आसान हो जाए इसलिए मानवी के पास आज अनेक आधुनिक उपकरणों मौजूद है। लेकिन मानवी का वैभव विलास भी बढ़ गया है। आज का मानवी बाहर से बहुत ही सुखी दिख रहा है लेकिन सच्चाई यह है कि वह मशीन बन गया है। वह अपनी जिंदगी को सुखी नहीं बना सकता। खुद के सपने साकार करने के लिए पूरी जिंदगी भागदौड़ करने वाला मानवी यह भूल गया है कि जिंदा रहने के लिए जरूरी हवा, पानी और खुराक के लिए इतनी भागदौड़ करने की जरूरत नहीं है। सिर्फ संतोष की अनुभूति का अनुभव करने से ही इसकी बुनियादी जरूरतें महत्तम तरीके से पूरी हो जाती है। लेकिन यहां समाज में दूसरे से अपने आपको अच्छा साबित करना, जुठा दिखावा करना ऐसी बाबतो को लेकर प्रकृति ने दिए यह मानव शरीर को कैसे संभालना है यह भी भूल गया है। ऐसी भागदौड़ से वो अस्पतालों का चक्करों काटने को शुरू हो जाता है। अब यहां पर उसको डॉक्टर की सलाह के मुताबिक अनिवार्य रूप से आराम करना पड़ता है। तो फिर ऐसा क्यों ना करें की शुरुआत में हमारे जीवन शैली में, खुराक में, कार्यों में थोड़ा ध्यान दें और थोड़ी सावधानी बरती जाए।

खुराक की बात करे तो आज हम इस बात की चर्चा करेंगे कि हर एक व्यक्ति को कितना नमक खाना चाहिए।

आज के समय में कोई भी मॉडर्न मेडिकल साइंस के डायेटिशयनो के पास जाओगे तो फिर उसके डायट टिप्स में नमक की मात्रा कम करना ,वजन कम करना हो, ब्लड प्रेशर की बीमारी हो,हार्ट अटैक की समस्या हो या हमें कोई भी जीवन शैली के संबंध बीमारियों के लिए डायेटिश्यन लो फैट डायट के साथ-साथ नमक की मात्रा कम करने की सलाह देंगे। अब तो कोई भी हेल्थ कॉन्सीशियस व्यक्ति चरबी युक्त चिजें और नमक को हेल्थ के खलनायक की तरह देखते है, ऐसा कह सकते हैं। आयुर्वेदिक शास्त्र में नमक के नाम से इतना सारा जमेला नहीं हुआ था। सोल्ट मतलब सोडियम क्षार शरीर के कई वाईटल प्रक्रिया के लिए जरूरी है। उसके बिना ढो नर्वकोषों के बीच का कम्युनिकेशन बिगड़ जाता है और इसकी वजह से शरीर की इंटरनल मैसेजिंग सिस्टम बिगड़ जाती है। यह बात सच है कि सोडियम जरूरी मात्रा से ज्यादा लेने से वह शरीर को निश्चित रूप से नुकसान पहुंचाता हैं। यहां पर सवाल यह पैदा होता है कि व्यक्ति के लिए नमक की कितनी मात्रा जरूरी है। वर्ल्ड हेल्थ आर्गेनाइजेशन के स्टैंडर्ड के मुताबिक हर व्यक्ति को रोजाना सिर्फ पांच ग्राम से कम नमक लेना चाहिए ऐसी गाइडलाइंस जारी की गई है। लेकीन इसका कोई स्टैंडर्ड उत्तर नहीं हो सकता।

आयुर्वेद इस विषय में क्या मानता है। एक

बात सच है कि आयुर्वेद में चर्म रोग हो या अति हाइ ब्लडप्रेशर जैसी कुछ समस्याओं को बाद करके नमक के उपयोग के बारे में ज्यादा कोई नियंत्रण या विरोध नहीं किया गया है। आयुर्वेद में नमक की मात्रा हर एक व्यक्तिगत प्रमाणित करने में नहीं आई है। इसकी वजह ये है कि सोडियम की मात्रा वातावरण और आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए लेने का हितकारी है।

गर्म प्रदेश, समशितोष्ण या एकदम ठंडे प्रदेश में सब जगह पर एक समान तापमान नहीं होता है इसलिए पसीना ज्यादा हो तो इसमें से निकलते प्रवाही के जरिए सोडियम बाहर आ जाता है। भारत जैसे उष्ण समशितोष्ण प्रदेश में नमक के रूप में रोजाना करीबन ६ से ८ ग्राम जीतना नमक लिया जा सकता है। एक बात तो सही है कि वातावरण और व्यक्ति कितनी मेहनत करता है उस पर भी नमक कितना लेना चाहिए वह निर्भर करता है। ज्यादा मेहनत करने वाले लोग अगर ज्यादा मात्रा में नमक का सेवन करें तो उसका बड़ा मात्रा में सोडियम पिशाब, मल और पसीने के जरीए बाहर निकल जाता है।

आजकल सोडियम के सेवन पर कटौती करने का कहा जाता है। क्योंकि हमारी शारीरीक प्रवृत्तियां कम हो गई है। बिना श्रम या कम श्रम होने से पसीना बहता ही नहीं है। घर, ऑफिस, कार जैसी सब जगह पर एसी के कारण थोडी बहुत गर्मी की वजह से पसीना होता था वह भी अभी नहीं आता है। ऐसे में एक ओर से शरीर में सोडियम का उत्सर्जन कम हो गया है तो दूसरी ओर सोडियम वाली चीजों का सेवन बढ़ गया है।

दूसरी वजह यह है कि शरीर को सोडियम की जरूरत है। लेकिन हम जो नमक का सेवन कर रहे हैं उसमें सिर्फ सोडियम ही नहीं दूसरे ३० से भी ज्यादा तरीके का सिंथेटिक केमिकल्स और क्षार होते हैं। सफेद, करकरा और तेजी से पीगले ऐसा बनाने के लिए इसमें जो सिंथेटिक मैटीरियल का इस्तेमाल हो रहा है वो ज्यादा हानि करता है। पहले के समय में नमक के गड्डे और सिंधव का उपयोग ज्यादा होता था। जिसके कारण वह सब जहरीले कैमिकल कि मौजूदगी नहीं रहती थी।

आयुर्वेद इस विषय में क्या मानता है। एक बात सच है कि आयुर्वेद में चर्म रोग हो या अति हाइ ब्लडप्रेशर जैसी कुछ समस्याओं को बाद करके नमक के उपयोग के बारे में ज्यादा कोई नियंत्रण या विरोध नहीं किया गया है। आयुर्वेद में नमक की मात्रा हर एक व्यक्तिगत प्रमाणित करने में नहीं आई है। इसकी वजह ये है कि सोडियम की मात्रा वातावरण और आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए लेने का हितकारी है।

तीसरी वजह है सोडियम एक अच्छे प्रिजर्वेटिव का काम करता है। इसलिए आज के समय में तैयार पैकिंग में मिलती ज्यादातर सब चीज में प्रचुर मात्रा में सोडियम होता है। सिर्फ २५ ग्राम पोटैटो चिप्स के पैक में ४४० मिलीग्राम जितना सोडियम होता है। ऐसा रु.१० की कीमत के पैकेट को तो कोई भी व्यक्ति चलते-फिरते हजम कर जाता है। यह सिंथेटिक सोडियम होने से हमारे शरीर को हानि पहुंचाता है।

गर्मी के दिनों में बार-बार सोडियम की कमी दिखाई देती है क्योंकि यह दिनों में पसीना बहुत मात्रा में होता है। सोडियम की कमी से दुर्बलता और सुस्तता आती है। लहू के दबाव में कमी आती है। जिसके कारण बेचैनी और घबराहट जैसे आसार बनते हैं। साथ-साथ में शरीर की वृद्धि पर भी इसकी असर दिखाई देती है। जो लोग कम नमक लेते हैं या उपवास करते हैं उसके पेशाब के उत्सर्जन की मात्रा कम हो जाती है। कभी-कभी शरीर में हारमोंस की असमानता और अनिश्चितता से उत्सर्जन की भी सोडियम उत्सर्जन में मुश्केली पैदा करती है।

दोस्तों एक बात तो सही है कि यह आधुनिक युग में जो हम यंत्रवत जीवन जी रहे हैं उसमें बदलाव लाना पड़ेगा और शारीरिक श्रम करना पड़ेगा। वैसे भी बैठे-बैठे या श्रम न करने से हमारा शरीर में कई रोग पैदा हो सकते हैं। इसलिए रोजाना थोड़ा समय निकालकर पसीना बहे ऐसा कम करें या व्यायाम भी कर सकते हैं। थोड़ा चलना और हल्की सी शारीरिक कसरत करने से भी हम अपने शरीर को स्वस्थ रख सकते हैं। ऐसा करने से मोटापा नहीं आएगा और हाई ब्लड प्रेशर और ऐसी कई बीमारियों से बच सकते हैं और अस्पतालों के चक्कर काटना कम हो जाएगा। कई लोग कई बार जॉगिंग, रनिंग, विगेरा शुरू करने को सोचते रहते हैं लेकिन इसके लिए समय नहीं निकाल सकते या समय निकालते हैं तो थोडे समय के लिए, बाद में सब आलस की वजह से बंद हो जाता है। इसलिए अपने शरीर को तंदुरुस्त और स्वस्थ रखने के लिए दृढ़ मनोबल से ऐसी प्रवृतियां शुरू करें और स्वस्थ रहे। आफ्टर ऑल हेल्थ इस वेल्थ।

मुंबई के अंडरवर्ल्ड की खोफनाक बातें

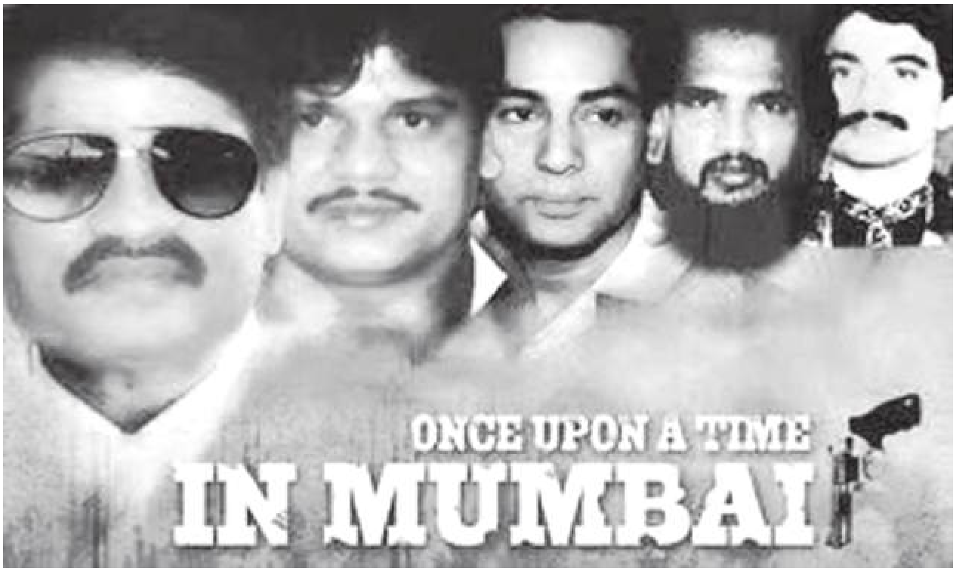

दोस्तों हमने पिछले अंक में देखा कि दाऊद और उसके लड़कों ने बाशुदादा पर बोतल और बल्बों से हमला किया था और बाशूदादा की महंगी और खूबसूरत सकार को नुकसान पहुंचा कर उसकी सूरत बिगाड़ दी थी। अब आगे......

जब कार चली गई तो दौड़ के लड़कों ने मिली फतेह का जश्न मनाना शुरू कर दिया। लेकिन दाऊद के मन को शांति नहीं थी। वो कुछ और ही सोच रहा था। बाशु के साथ उसका हिसाब पूरा नहीं हुआ था। वो अपने आप पर गुस्सा हुआ क्योंकि न तो वो बाशु को सबक शिखा पाया था नहीं अपना बदला पूरा कर पाया था।

अब गिरोह के सब लड़कों ने अपनी मोटरसाइकिल उठाई और टेमकर मोहले पहुंचे जहां पर खड़े किए गए अपने अखाड़े में बाशु के अहंकारको सहलाने के लिए इकट्ठा हुए थे। रिवायती अखाड़े आइनो से घिरी बडी सी गोलाकार जगह होती है।जहां लोग भारी वजन उठा सकते हैं, हंसी मजाक कर सकते है, कुस्ती लड़ सकते हैं और अपने आपको तंदुरस्त और शारीरिक तौर पे फीट रह सकते है। बाशु के अखाड़े में एक खास बात ये थी कि बादाम का शरबत बनाने की मशीन को इज्जत की जगह दी गई थी। दाऊद और उसके लड़कों ने अखाड़े की दीवारों पे धावा बोल दिया। बाशु द्वारा की गई अपने पिता की बेइज्जती को याद करते हुए उसने आईनो को चकनाचूर कर दिया। अपने गिरोह के साथ मिलकर दाऊद ने पुरे अखाड़े को तबाह कर दिया। आईने,फर्नीचर, साजो सामान और बादाम के शरबत बनाने वाली मशीन को भी।

इस घटना ने बाशु को हिला कर रख दिया। वो आईने में खुद अपनी शक्ल देखना नहीं चाहता था। उसने सार्वजनिक जीवन से रुखसत ले ली। अखाड़ा उसके जीवन काअंदरूनी हिस्सा था और जब वह पूरी तरह से तबाह हो गया तो उसका वजूद भी खत्म हो गया। जब समय का चक्कर बदलता है तब किस्मत भी रूठ जाती है और अपने नौकर भी अच्छी जिन्दगी जीने के लिए वहा से चले जाते हैं। बाशु के साथ भी ऐसा ही हुआ। इस घटना के बाद जल्दी ही बाशु को मुंबई पुलिस द्वारा नेशनल सिक्योरिटी एक्ट के तहत एक साल की गैर जमानती कैद के प्रावधान के तहत गिरफ्तार कर लिया गया। तेली मोहल्ले की जिम्मेदारी खालिद पहलवान को सौंप दी गई। यह एक अच्छा मौका था उस चाल के लिए के जो बाद में जल्दी ही दाऊद के ठप्पे के साथ उसकी अपनी खास चाल के रूप में पहचान बनाने वाली थी। बाशु का दायां हाथ होने के बावजूद खालिद की गिनती बाशु के जागीर के छोटे-मोटे मातहतो में होती आई थी। दाऊद ने बाशु के उत्तराधिकारी की वफादारी जीतने के लिए तेजी से एक चाल चली। उसने जरा भी चूंक नहीं की के उसके मन में उसके प्रति न दुश्मनी है और न अदावत का भाव। अगर खालीद उसके के साथ काम करने को राजी हो तो उसे खुशी होगी। इस तरह दाऊद ने एक ही चाल में बाशु के पर काट लिए और उसके शासन का अंत कर दिया।

यह सारे घटनाक्रम के बाद बाशु ने जेल से वापस आने के बाद भी लोगों को मिलना जुलना बंद कर दिया। उसने टेम्कर मोहल्ले में भी कभी कदम नहीं रखा। अब वह हैदराबाद और वालकेश्वर के अपने घरों में अपना वक्त गुजारने लगा और इस समय के बाद उसके बारे में शायद ही किसी ने सुना होगा। मानो

बाशुदादा कही खो गए ।

कुछ साल बाद जब दाऊद ने सुना कि मुंबई पर हुकूमत करने वाले सौने के बादशाह हाजी मस्तान मिर्जा ने कुछ पठानों से उसकेदो गुर्गो को पिटवाया हैं, कोई लोग सच्ची बात नहीं जानते थे कि हाजी मस्तान ने अबू बकर और एजाज को पीटने का फैसला क्यों किया लेकिन वह अब दाऊद के वर्चस्व पर हमला कर चुका था । दाऊद मस्तान के साथ हिसाब चूकते करना चाहता था । जिसके बारे में उसका ख्याल था कि वो सोने और चांदी की तस्करी के धंधे से काफी पैसा कमाया था और एशो आराम की जिंदगी के साथ मुंबई पर हुकूमत करता था । मस्तान का नाम का फायदा मिला था मद्रासी वर्धा भाई को । दाऊद जानता था की मस्तान कर्तबी इंसान नहीं था । शहर में अपनी धाक जमाने के लिए उसने कुछ नहीं किया था और दूसरी और रोज आए दिन अखबारों में आई हुई उसकी तस्वीरें से दाऊद तंग आ चुका था जो तमाम तरह के फिल्म मुहूर्त के दौरान दिखती रहती थी । बॉलीवुड पर मस्तान की धुन सवार थी और वो आने वाली फिल्मों में उसको उसकी प्रतिमा को उभारने की योजना बना रहे थे ।

दाऊद को यह सब पसंद नहीं आ रहा था । इसलिए ४ दिसंबर, १९७४ को जिस वक्त ऊपरी तौर पर मर्दो की एक टोली जोरदार बहस में मशगूल थी, उनमें से एक शख्स , नौजवान दाऊद इब्राहिम इस माफिया सरगाना के पतन की योजना बना रहा था ।

बाशु के साम्राज्य को खत्म करके और डोंगरी का बिग बॉस होने का एलान कर चुकने के बाद दाऊद को लगने लगा था कि वह मुंबई में कुछ भी कर सकता है और उसके अंजाम से बच निकल सकता है । बचाव का अच्छा तरीका होता है आक्रमण और बदला लेने का सबसे अच्छा तरीका है सामने वाले की ऐसी जगह पर वार करना जहां सबसे ज्यादा चोट पहुंचती हो । मस्तान के लिए पैसा सब कुछ था इसलिए उसने मस्तान की काली कमाई की एक बड़े हिस्से पर हाथ साफ कर के उसके साथ हिसाब चूकते करने का निश्चय किया । दिसंबर की उस सुबह इस मंडली को अपने खुफिया सूत्रों के हवाले से गुप्त सूचना मिल चुकी थी अंडरवर्ल्ड की भाषा में 'टिप' । सुराग ऐसा मिला था की कोई आंगड़िया में मस्तान के रु. ५,००,००० मस्जिद बंदर के एक ऑफिस से उसके मालाबार हिल वाले मकान में देने के लिए जाने वाला था । आंगड़िया मुंबई के अवैध तरीके से पैसा लाने ले जाने वालों को कहा जाता है जिन्हें वेस्टर्न यूनियन का एक तरह का देसी रूप कहा जा सकता है और आमतौर से मारवाड़ी समुदाय के होते हैं ।अचानक से यह फैसला लिया गया कि मस्तान को इस बेस कीमती रोकड़ से महरूम करके उनके दो साथियों की बेवजह पिटाई और यातना की भरपाई कर ली जाए । डोंगरी के नौजवानों के लिए ये इज्जत का सवाल था । वह अपने साथियों की पिटाई का बदला लेना अपनी जिम्मेदारी समझते थे । इसके अलावा वो दोनों दाऊद के गिरोह का हिस्सा थे और उसके दोस्त थे । अपने लड़कों के प्रति वफादारी के चलते दाऊद के लिए ये मुमकिन नहीं था कि वह पूरे मसले को नजरअंदाज कर उस से मुंह मोड़ लेता । ५,००,००० लाख रूपये उस ज़माने में बहुत बडी रकम थी । इन नौजवानों ने भी अब इतनी बड़ी रकम इससे पहले कभी नहीं देखी थी । ऐसी योजना पहली बार बनी थी इसलिए नौजवानों उसको लेकर थोड़े नर्वस थे लेकिन अपने दोस्तों की पिटाई का बदला लेने का जुनून भी था । उनको मालूम था की आंगडिया बेवकूफ होते हैं कि बिना किसी की निगरानी और मदद के बिना ही इतनी बड़ी रकम ले जाते हैं । दाऊद और उनकी मंडली ने तय किया कि वह आंगड़िया पर उस वक्त हमला करेंगे जब वह मस्जिद बंदर से निकलकर कनार्क बंदर ब्रिज की तरफ जा रहा हो क्योंकि दाऊद मुसाफिरखाना के इलाके का सरगना था । वह इस इलाके के चप्पे चप्पे से वाकिफ था । उसे यह भी पत्ता था की किस तरह वाहनों के रास्ते में अडंगे डाल सकता है , किस तरह से पैसे झटक सकता है और किस तरह पुलिस या और लोगों को मालूम पड़े बिना भिड़ में गायब हो सकता है । क्रमशः

(सौजन्य: एस. हुसैन झैदी)

यह सारे घटनाक्रम के बाद बासु ने जेल से वापस आने के बाद भी लोगों को मिलना जुलना बंद कर दिया । उसने टेम्कर मोहल्ले में भी कभी कदम नहीं रखा । अब वह हैदराबाद और वालकेश्वर के अपने घरों में अपना वक्त गुजारने लगा और इस समय के बाद उसके बारे में शायद भी किसी ने सुना होगा । मानो बाशुदादा कही खो गए ।

Available in : 200g | 500g | 1kg

Contact For Dealership
94291 66920 | 70165 84097

Mfg by : **SHREENATHJI FOOD**
Plot No. G-2063/64/C, Nr. Delta Solar, GIDC Metoda,
Village: Metoda, Tal.: Lodhika, Dist.: Rajkot.
E-mail: shreenathjifood2023@gmail.com

Facilities Available

- √ 40 Bedded Pediatric Super-Speciality Hospital in Heart of the Rajot City.
- √ Managed by expert in the field, Pediatrician, Ped. Intensivist, Neonatologist & Pediatric Super-specialists.
- √ 24x7 availability of Intensivist.
- √ First Qualified Pediatric Intensivist of Saurashtra-Kutchh region.
- √ State of the art Level 3 NICU & Level 3 PICU equipped with Conventional & High Frequency Ventilators, Non-Invasive Ventilator, Bubble CPAP, Invasive BP and CVP Monitoring, Defibrillator.
- √ Facility for Bed side Ultrasonography, 2D-Echocardiography & ECG.
- √ Facility for Dialysis for Neonatal and Pedicatric Patients with Renal Failure/Metabolic, X-Ray Facility.
- √ Availability of Ambulance for transport of sick newborns and children.
- √ Cash less Mediclaim Facilities.

Dr. Pritesh Rathod
M.D. (Ped), D.Ped.
Consultant Padiatrician & Neonatologist

Dr. Divyang Bhimani
M.B., D.C.H. FIPCC.
Consultant Pediatrician & Pediatric Intensivist

Dr. Maulik Korvadiya
M.D. (Ped),
Neonatologist & Head of NICU

Dr. Dharmesh Oza
M.D., P.G.D.C.T.M.
Consultant Pediatrician & Neonatologist

Dr. Nirav Patel
M.B. D.C.H.,
Consultant Pediatrician & Neonatologist

Dr. Ashish Khambhaita
M.B. D.C.H. D.N.B. (Ped)
Consultant Pediatrician & Neonatologist

Dr. Tushar Zalavadiya
M.B. D.C.H. P.G.P.N.
Consultant Pediatrician & Neonatologist

Press Reporter (All India) Crime Force Media Yogendra Pandya

Mavdi Branch
2nd Floor, One Mavdi,
Near Haridarsan School,
Mavdi - Pal Road, Rajkot.

FOR EMERGENCY
63 5 63 33 108

Divine Child Care Hospital Plus

Creating Healthy Tomorrows...

Virani Chowk Branch
15-Ramkrishna Nagar,
Opp. Virani Highschool,
Virani Chowk,
Tagor Road, Rajkot.

FOR EMERGENCY
90 3 30 80 108

Think Overseas
IMMIGRATION & VISA CONSULTANCY SERVICES

WORK PERMIT

Dependent Visa Available

Job Profile:
Amazon Warehouse (Packing)

Job Hours: 8 Hrs

Salary: Min 800 Euro

- Accommodation
- Stay
- Food
- Transportation
- Flight Tickets
- VFS Fee by the Company

Processing Time: 3 Months

Processing Cost: 6.5 Lacks

Country: Luxembourg, Croatia Czech Republic, Malta

+91 98258 97222 (Baroda & Anand)

Branches : Mehsana : (M) 98250 55400 & Bharuch : (M) 78018 28329

CRIME FORCE
सत्यमेव जयते

If Undelivered, Please return to :

Raj Complex, Opp. Star Plaza,
Fulchhab Chowk,
Rajkot - 360 001.

To,